CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2018 with Solution PDF-Set 2/3 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 6, 10 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 20 – 30 शब्दों में दीजिए :

अब प्रश्न यह है कि हम सरल कैसे बनें । सीधा सा उत्तर है, सरल रहें । जो मन में है उसे कह डालें लेकिन पूरी शालीनता से । कम-से-कम एक मुसकराहट बिखेर दें, स्वयं को स्वीकारें और दूसरों को भी । सरलता आती जाएगी । जो व्यक्ति पल-पल घटती घटनाओं को दर्शक की तरह देखता रहता है, चीज़ों को पकड़कर नहीं बैठता, बोलने की क्षमता होने पर भी एक भी शब्द व्यर्थ नहीं बोलता वही मितभाषी है । मितभाषी इस रहस्य को जानता है कि मौन ही सर्वोत्तम भाषण है । कम-से-कम बोलना, एक शब्द से काम चले तो दो का प्रयोग न करना मितभाषी के लक्षण हैं, जो मौन की साधना का प्रथम चरण है । कम बोलने का अभ्यास धीरे-धीरे करना पड़ता है । केवल आवश्यकता पड़ने पर ही सारयुक्त शब्दों का प्रयोग करने से हम बहुत-सी शक्ति के अपव्यय से बच सकते हैं ।

विचार ही वाणी और सारी क्रियाओं का मूल होता है । इसलिए वाणी और क्रिया भी विचार का ही अनुसरण करती हैं । नियंत्रित विचार खुद ही सर्वोच्च प्रकार की शक्ति है । मनुष्य जाने-अनजाने अतिशयोक्ति करता है, या जो बातें कहने योग्य हैं उन्हें छिपाता है, या उन्हें दूसरे ढंग से कहता है । ऐसी स्थिति से बचने के लिए मितभाषी होना जरूरी है । कम बोलने वाला आदमी बिना विचारे नहीं बोलेगा, वह अपने हर शब्द को तौलकर ही प्रयोग करेगा ।

जब आप मौन का नियमित अभ्यास करते हैं, तो वह आपकी शारीरिक और आध्यात्मिक आवश्यकता बन जाता है । प्रारंभ में काम के दबाव से राहत पाने में भी मौन से मदद मिलती है । धीरे-धीरे आपको मौन के समय अपने भीतर शक्ति और क्षमता का अनुभव होने लगता है । गीता में स्पष्ट कहा गया है कि ऐसी वाणी जो उत्तेजित न करे, सच्ची, प्रिय और हितकारी हो उसे वाणी की तपस्या कहते हैं और यह तपस्या करना दुष्कर तो है किंतु असंभव नहीं है । [15 अंक]

1(क). मितभाषी किसे कहा जाता है ? स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मितभाषी की पहचान केवल कम बोलना नहीं, बल्कि व्यर्थ शब्दों से बचते हुए विचारपूर्वक सार्थक बात कहना है।
- उत्तर का आधार केवल दिए गए गद्यांश की बातें हैं। अंतिम उत्तर को निर्धारित 20 से 30 शब्दों की सीमा में सारगर्भित रखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से आधार पहचानें गद्यांश में बोलने की क्षमता होने पर भी एक शब्द व्यर्थ न बोलने वाले को मितभाषी कहा गया है। वह घटनाओं को दर्शक की तरह देखता है और उनसे चिपककर नहीं बैठता।

चरण 2: उत्तर की सामग्री व्यवस्थित करें एक शब्द पर्याप्त हो तो दो शब्द न कहना उसके संयम का उदाहरण है। इसलिए उत्तर में आवश्यकता, सार्थकता और शब्दों के विवेकपूर्ण चुनाव को जोड़ना चाहिए। मौन रहने की विवशता और स्वेच्छा से वाणी का संयम अलग स्थितियाँ हैं। इस प्रकार उत्तर में लेखक के आशय की पूर्णता बनी रहती है और अनावश्यक विस्तार से बचा जा सकता है। प्रश्न में माँगी गई बातों को स्पष्ट रूप से जोड़ना ही उचित उत्तर की कसौटी है।

चरण 3: निष्कर्ष जो बोलने में समर्थ होकर भी व्यर्थ शब्द नहीं बोलता तथा आवश्यकता पड़ने पर सोचकर सारयुक्त शब्दों का प्रयोग करता है, वही मितभाषी कहलाता है।

त्वरित सुझाव: मितभाषी की पहचान लिखते समय आवश्यकता पर सार्थक शब्द बोलना और व्यर्थ शब्दों से बचना, दोनों विशेषताएँ जोड़ें।

1(ख). "मनुष्य जाने-अनजाने अतिशयोक्ति करता है" – कैसे ? इससे कैसे बचा जा सकता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में अतिशयोक्ति का स्वरूप और उससे बचने का उपाय, दोनों बताने हैं।
- उत्तर का आधार केवल दिए गए गद्यांश की बातें हैं। अंतिम उत्तर को निर्धारित 20 से 30 शब्दों की सीमा में सारगर्भित रखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से आधार पहचानें मनुष्य कभी बात बढ़ा-चढ़ाकर कहता है, कभी कहने योग्य बात छिपाता है और कभी उसे दूसरे ढंग से प्रस्तुत करता है। गद्यांश इन प्रवृत्तियों को सत्य और संतुलित अभिव्यक्ति से विचलन के रूप में रखता है।

चरण 2: उत्तर की सामग्री व्यवस्थित करें इससे बचने के लिए मितभाषी होना आवश्यक है। कम बोलने वाला पहले विचार करता है और

हर शब्द तौलकर कहता है। अत: केवल चुप रहना नहीं, सोचकर सही और आवश्यक बात कहना उपाय है। इस प्रकार उत्तर में लेखक के आशय की पूर्णता बनी रहती है और अनावश्यक विस्तार से बचा जा सकता है। प्रश्न में माँगी गई बातों को स्पष्ट रूप से जोड़ना ही उचित उत्तर की कसौटी है।

चरण 3: निष्कर्ष मनुष्य बातें बढ़ाकर, छिपाकर या बदलकर कहता है। मितभाषी बनकर, बोलने से पहले विचार करके और प्रत्येक शब्द तौलकर प्रयोग करने से इससे बच सकता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में बढ़ाना, छिपाना और बदलना के साथ उपाय भी जोड़ें: पहले विचार करें, फिर हर शब्द तौलकर बोलें।

1(ग). वाणी की तपस्या किसे कहा गया है ? समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न गद्यांश में दी गई आदर्श वाणी की विशेषताओं की पहचान कराता है।
- उत्तर का आधार केवल दिए गए गद्यांश की बातें हैं। अंतिम उत्तर को निर्धारित 20 से 30 शब्दों की सीमा में सारगर्भित रखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से आधार पहचानें गद्यांश के अंत में गीता के आधार पर ऐसी वाणी की चर्चा है जो सुनने वाले को उत्तेजित न करे। उसके साथ सत्य, प्रियता और हितकारिता भी अनिवार्य गुण बताए गए हैं।

चरण 2: उत्तर की सामग्री व्यवस्थित करें इसलिए केवल मीठा बोलना पर्याप्त नहीं; कथन सच्चा और दूसरे के हित में भी होना चाहिए। इन गुणों का नियमित संयमपूर्ण अभ्यास वाणी की तपस्या है। लेखक इसे कठिन कहता है, पर असंभव नहीं मानता। इस प्रकार उत्तर में लेखक के आशय की पूर्णता बनी रहती है और अनावश्यक विस्तार से बचा जा सकता है। प्रश्न में माँगी गई बातों को स्पष्ट रूप से जोड़ना ही उचित उत्तर की कसौटी है।

चरण 3: निष्कर्ष जो वाणी उत्तेजना न फैलाए तथा सच्ची, प्रिय और हितकारी हो, उसे वाणी की तपस्या कहा गया है। इसके लिए संयमित बोलने का अभ्यास आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: वाणी की चार कसौटियाँ साथ याद रखें: उत्तेजित न करना, सत्य बोलना, प्रिय बोलना और हितकारी बोलना।

1(घ). कम बोलने से क्या लाभ हैं और अधिक बोलने का क्या परिणाम होता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलनात्मक प्रश्न का उत्तर देते समय दोनों पक्षों का आधार गद्यांश से लेना चाहिए।
- उत्तर का आधार केवल दिए गए गद्यांश की बातें हैं। अंतिम उत्तर को निर्धारित 20 से 30 शब्दों की सीमा में सारगर्भित रखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से आधार पहचानें लेखक आवश्यकता पड़ने पर सारयुक्त शब्दों के प्रयोग की सलाह देता है। इससे शक्ति का अपव्यय रुकता है और व्यक्ति सोच-विचारकर बोलता है। नियंत्रित विचार वाणी तथा क्रिया को भी संयमित करते हैं।

चरण 2: उत्तर की सामग्री व्यवस्थित करें अधिक बोलने का परिणाम बताते समय गद्यांश के आशय तक सीमित रहें। व्यर्थ शब्द शक्ति नष्ट करते हैं और बिना विचार के बोलने से अतिशयोक्ति अथवा बात को बदलकर कहने की संभावना बनती है। बाहरी उदाहरण जोड़ना आवश्यक नहीं। इस प्रकार उत्तर में लेखक के आशय की पूर्णता बनी रहती है और अनावश्यक विस्तार से बचा जा सकता है। प्रश्न में माँगी गई बातों को स्पष्ट रूप से जोड़ना ही उचित उत्तर की कसौटी है।

चरण 3: निष्कर्ष कम बोलने से शक्ति बचती है और शब्दों का विवेकपूर्ण प्रयोग होता है। अधिक बोलने से शक्ति का अपव्यय तथा अतिशयोक्ति की संभावना बढ़ती है।

त्वरित सुझाव: कम तथा अधिक बोलने की तुलना शक्ति की बचत और शक्ति के अपव्यय के आधार पर करें; विचारपूर्वक बोलने का लाभ भी जोड़ें।

1(च). मौन के दो लाभों की चर्चा कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में मौन के दो अलग लाभ स्पष्ट रूप से बताने हैं; दोनों गद्यांश के अंतिम अनुच्छेद में मिलते हैं।
- उत्तर का आधार केवल दिए गए गद्यांश की बातें हैं। अंतिम उत्तर को निर्धारित 20 से 30 शब्दों की सीमा में सारगर्भित रखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से आधार पहचानें लेखक के अनुसार प्रारंभ में मौन काम के दबाव से राहत पाने में सहायता करता है। यह पहला लाभ है। इसे शारीरिक आराम के हर संभव दावे तक न फैलाकर काम के दबाव से मिलने वाली राहत तक रखें।

चरण 2: उत्तर की सामग्री व्यवस्थित करें नियमित अभ्यास से धीरे-धीरे व्यक्ति अपने भीतर शक्ति और क्षमता अनुभव करने लगता है। यह दूसरा लाभ है। गद्यांश मौन को आगे चलकर शारीरिक और आध्यात्मिक आवश्यकता बनते हुए दिखाता है; उत्तर इसी क्रम पर आधारित है। इस प्रकार उत्तर में लेखक के आशय की पूर्णता बनी रहती है और अनावश्यक विस्तार से बचा जा सकता है। प्रश्न में माँगी गई बातों को स्पष्ट रूप से जोड़ना ही उचित उत्तर की कसौटी है।

चरण 3: निष्कर्ष मौन के अभ्यास से काम के दबाव से राहत मिलती है। नियमित अभ्यास द्वारा व्यक्ति अपने भीतर की शक्ति और क्षमता का अनुभव करने लगता है।

त्वरित सुझाव: मौन के दो अलग लाभ चुनें: काम के दबाव से राहत तथा भीतर की शक्ति और क्षमता का अनुभव।

1(छ). लेखक ने व्यक्तित्व को सरल बनाने के क्या उपाय बताए हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का केंद्र गद्यांश का आरंभिक भाग है, जिसमें सरल बनने के व्यावहारिक उपाय दिए हैं।
- उत्तर का आधार केवल दिए गए गद्यांश की बातें हैं। अंतिम उत्तर को निर्धारित 20 से 30 शब्दों की सीमा में सारगर्भित रखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से आधार पहचानें लेखक मन की बात पूरी शालीनता से कहने को कहता है। भावों को व्यक्त करते समय विनम्रता बनी रहनी चाहिए। साथ ही कम-से-कम एक मुसकराहट बिखेरना व्यवहार में सहजता लाने का उपाय बताया गया है।

चरण 2: उत्तर की सामग्री व्यवस्थित करें सरलता के लिए स्वयं को और दूसरों को स्वीकारना भी आवश्यक है। इसलिए उत्तर में केवल मुसकराने या केवल कम बोलने का उल्लेख पर्याप्त नहीं। शालीन अभिव्यक्ति, मुसकराहट तथा दोनों प्रकार की स्वीकृति को साथ रखना चाहिए। इस प्रकार उत्तर में लेखक के आशय की पूर्णता बनी रहती है और अनावश्यक विस्तार से बचा जा सकता है। प्रश्न में माँगी गई बातों को स्पष्ट रूप से जोड़ना ही उचित उत्तर की कसौटी है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक के अनुसार मन की बात शालीनता से कहना, मुसकराहट बिखेरना तथा स्वयं को और दूसरों को स्वीकार करना व्यक्तित्व को सरल बनाने के उपाय हैं।

त्वरित सुझाव: सरलता के उपायों में शालीन अभिव्यक्ति, मुसकराहट और स्वयं सहित दूसरों की स्वीकृति, तीनों बिंदु जोड़ें।

1(ज). आशय स्पष्ट कीजिए, 'मौन ही सर्वोत्तम भाषण है ।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में मौन का अर्थ अनावश्यक बोलने से बचना और विवेकपूर्वक सारयुक्त शब्द चुनना है।
- उत्तर का आधार केवल प्रस्तुत गद्यांश या काव्यांश की संबंधित पंक्तियाँ हैं।

चरण 1: संबंधित कथन पहचानें मितभाषी व्यक्ति बोलने की क्षमता होने पर भी शब्दों का व्यर्थ प्रयोग नहीं करता। वह आवश्यकता पड़ने पर ही बोलता है और प्रत्येक शब्द को तौलता है। इस प्रकार उसका संयम स्वयं उसकी समझ और गंभीरता प्रकट करता है। एक शब्द से काम चलने पर दो शब्द न बोलने का उदाहरण भी इसी विवेकपूर्ण व्यवहार को समझाता है।

चरण 2: आशय समझें मौन से शक्ति का अपव्यय रुकता है और भीतर की क्षमता का अनुभव होता है। अतः उक्त कथन निरर्थक बातचीत की अपेक्षा विचारपूर्ण संयम की श्रेष्ठता बताता है; इसका आशय आवश्यक संवाद बंद कर देना नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष मौन अनावश्यक शब्दों से बचाकर विचारों को संयमित करता है। आवश्यकता पर बोले गए सार्थक शब्द अधिक प्रभावी होते हैं; इसलिए मौन सर्वोत्तम भाषण है।

त्वरित सुझाव: मौन का आशय लिखते समय तीन बातें जोड़ें: व्यर्थ बोलने से बचाव, विचारों का संयम और आवश्यक सारयुक्त शब्दों का प्रभाव।

1(ङ). गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपयुक्त शीर्षक गद्यांश के मुख्य विचार को संक्षिप्त और व्यापक रूप में व्यक्त करता है।
- उत्तर का आधार केवल प्रस्तुत गद्यांश या काव्यांश की संबंधित पंक्तियाँ हैं।

चरण 1: संबंधित कथन पहचानें गद्यांश में कम बोलने, सारयुक्त शब्द चुनने तथा प्रत्येक शब्द तौलकर प्रयोग करने पर बल दिया गया है। ये सभी बातें मितभाषिता से संबंधित हैं।

चरण 2: आशय समझें लेखक मौन से शक्ति की बचत और आंतरिक क्षमता के अनुभव का भी उल्लेख करता है। इसलिए शीर्षक में मितभाषिता और मौन, दोनों का समावेश पूरे गद्यांश को समेटता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक: मितभाषिता और मौन का महत्त्व।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनने से पहले पूरे गद्यांश में बार-बार आए कम बोलने और मौन के विचार पहचानें; इन्हीं को संक्षिप्त शीर्षक में समेटें।

2. नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लगभग 20 शब्दों में लिखिए ।

शांति नहीं तब तक, जब तक,
सुख भाग न सबका सम हो ।
नहीं किसी का बहुत अधिक हो,
नहीं किसी का कम हो ।
स्वत्व माँगने से न मिले,
संघात पाप हो जाएँ ।
बोलो धर्मराज, शोषित वे
जियें या कि मिट जाएँ ?
न्यायोचित अधिकार माँगने
से न मिले, तो लड़ के
तेजस्वी छीनते समर को
जीत या कि खुद मर के
किसने कहा पाप है समुचित
स्वत्व प्राप्ति-हित लड़ना ?
उठा न्याय का खड्ग समर में
अभय मारना मरना ? [5 अंक]

2(क). धर्मराज से क्या पूछा गया है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में शोषितों के अधिकार तथा उनके अस्तित्व का प्रश्न धर्मराज के सामने रखा गया है।
- उत्तर का आधार केवल प्रस्तुत गद्यांश या काव्यांश की संबंधित पंक्तियाँ हैं।

चरण 1: संबंधित कथन पहचानें कवि कहता है कि माँगने पर शोषितों को उनका स्वत्व नहीं मिलता। यदि अधिकार पाने के लिए संघर्ष भी पाप मान लिया जाए, तो उनके सामने गहरी दुविधा उत्पन्न होती है।

चरण 2: आशय समझें इसी स्थिति में कवि पूछता है कि वे जिएँ या मिट जाएँ। उत्तर में अधिकार से वंचित होने और संघर्ष को पाप मानने की दोनों स्थितियाँ जोड़ना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष धर्मराज से पूछा गया है कि अधिकार माँगने पर न मिलें और संघर्ष पाप माना जाए, तो शोषित जिएँ या मिट जाएँ?

त्वरित सुझाव: प्रश्न का उत्तर बनाते समय अधिकार न मिलना, संघर्ष को पाप मानना और शोषितों के अस्तित्व की दुविधा, तीनों जोड़ें।

2(ख). काव्यखण्ड का संदेश अपने शब्दों में लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश न्यायपूर्ण समानता और उचित अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष का संदेश देता है।
- उत्तर का आधार केवल प्रस्तुत गद्यांश या काव्यांश की संबंधित पंक्तियाँ हैं।

चरण 1: संबंधित कथन पहचानें आरंभ में कवि सुख का समान भाग मिलने को शांति की शर्त बताता है। इससे स्पष्ट है कि शांति केवल युद्ध के अभाव से नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय से स्थापित होती है।

चरण 2: आशय समझें आगे कवि उचित अधिकार माँगने पर न मिलने की स्थिति में संघर्ष का समर्थन करता है। इसलिए संदेश में समानता के साथ अन्याय के प्रतिरोध का विचार भी शामिल होगा।

चरण 3: निष्कर्ष सुख का न्यायपूर्ण बँटवारा शांति का आधार है। माँगने से उचित अधिकार न मिलें, तो उन्हें पाने के लिए निर्भय संघर्ष करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: संदेश लिखने के लिए आरंभ की समानता और अंत के न्यायपूर्ण संघर्ष को जोड़ें; केवल युद्ध का समर्थन लिखकर उत्तर अधूरा न छोड़ें।

2(ग). शांति के लिए क्या आवश्यक है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में स्थायी शांति की शर्त सुख और सुविधाओं का न्यायपूर्ण वितरण है।
- उत्तर का आधार केवल प्रस्तुत गद्यांश या काव्यांश की संबंधित पंक्तियाँ हैं।

चरण 1: संबंधित कथन पहचानें कवि स्पष्ट कहता है कि जब तक सबका सुख भाग समान नहीं होता, तब तक शांति संभव नहीं है। इस कथन का केंद्र समाज में व्याप्त असमानता है।

चरण 2: आशय समझें अगली पंक्तियों में किसी के पास बहुत अधिक और किसी के पास कम न होने की बात है। उत्तर में इसी आर्थिक और सामाजिक विषमता को मिटाने का भाव व्यक्त करना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष शांति के लिए सुख और साधनों का न्यायपूर्ण बँटवारा आवश्यक है, जिससे किसी के पास बहुत अधिक और किसी के पास कम न हो।

त्वरित सुझाव: शांति की शर्त पहली चार पंक्तियों में खोजें और सुख की समानता के साथ बहुत अधिक तथा बहुत कम वाले अंतर का उल्लेख करें।

2(घ). तेजस्वी लोगों की क्या पहचान है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तेजस्विता का अर्थ यहाँ न्यायपूर्ण अधिकारों के लिए साहसपूर्वक संघर्ष करने की क्षमता है।
- उत्तर का आधार केवल प्रस्तुत गद्यांश या काव्यांश की संबंधित पंक्तियाँ हैं।

चरण 1: संबंधित कथन पहचानें कवि के अनुसार तेजस्वी व्यक्ति उचित अधिकार केवल माँगकर संतुष्ट नहीं हो जाते। यदि माँगने पर अधिकार नहीं मिलते, तो वे संघर्ष का मार्ग अपनाते हैं।

चरण 2: आशय समझें वे युद्ध में विजय प्राप्त करने अथवा अपने प्राण देने तक के लिए तैयार रहते हैं। यह साहस व्यक्तिगत लालच के लिए नहीं, अपने न्यायोचित स्वत्व की रक्षा के लिए होता है।

चरण 3: निष्कर्ष तेजस्वी लोग माँगने से न्यायोचित अधिकार न मिलने पर संघर्ष करके उन्हें प्राप्त करते हैं और इसके लिए प्राणों का बलिदान भी करते हैं।

त्वरित सुझाव: तेजस्वी की पहचान बताते समय पहले माँगने से अधिकार न मिलने की शर्त और फिर संघर्ष तथा बलिदान की तत्परता लिखें।

2(ङ). कौन सा युद्ध निष्पाप माना गया है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि युद्ध के उद्देश्य के आधार पर उसकी नैतिकता पर विचार करता है।
- उत्तर का आधार केवल प्रस्तुत गद्यांश या काव्यांश की संबंधित पंक्तियाँ हैं।

चरण 1: संबंधित कथन पहचानें काव्यांश में समुचित स्वत्व प्राप्त करने के लिए लड़ने को पाप मानने पर प्रश्न उठाया गया है। यहाँ स्वत्व का अर्थ व्यक्ति का उचित अधिकार है।

चरण 2: आशय समझें न्याय का खड्ग उठाने का उल्लेख अन्याय के विरोध को स्पष्ट करता है। इसलिए हर युद्ध को निष्पाप कहना गलत होगा; समर्थन केवल न्याय और उचित अधिकारों की रक्षा वाले युद्ध का है।

चरण 3: निष्कर्ष अपने न्यायोचित अधिकार प्राप्त करने और अन्याय का प्रतिरोध करने के लिए न्याय के पक्ष में लड़ा गया युद्ध निष्पाप माना गया है।

त्वरित सुझाव: निष्पाप युद्ध के उत्तर में न्यायोचित अधिकार प्राप्ति का उद्देश्य अवश्य लिखें; बिना उद्देश्य बताए हर युद्ध को उचित न ठहराएँ।

---

3. दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखकर कुछ लोगों के द्वारा स्वच्छता अभियान के महत्त्व को कम आँकने और इसके प्रति अपनाए जा रहे उपेक्षा भरे व्यवहार पर चिंता व्यक्त कीजिए । (150 शब्दों में) [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक के नाम पत्र में सार्वजनिक समस्या को शिष्ट और तथ्यपरक भाषा में उठाया जाता है। प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन तथा समापन इसके आवश्यक अंग हैं।
- इस पत्र का केंद्र स्वच्छता अभियान के प्रति उपेक्षा है। समस्या के साथ स्वास्थ्य पर उसका प्रभाव और नागरिक सहभागिता के व्यावहारिक उपाय भी प्रस्तुत करने चाहिए।

चरण 1: पत्र का प्रारूप और विषय निर्धारित करना सबसे पहले प्रेषक का पता और दिनांक लिखेंगे। इसके बाद दैनिक समाचार-पत्र के संपादक का पद और पता देंगे। विषय में स्वच्छता अभियान के प्रति उदासीनता पर चिंता स्पष्ट करेंगे। संबोधन के बाद सार्वजनिक समस्या रखेंगे और अंत में प्रकाशन का विनम्र अनुरोध, धन्यवाद तथा नाम लिखेंगे।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना पत्र में कूड़ा फैलाने और अभियान को केवल सरकारी काम मानने की प्रवृत्ति का उल्लेख करेंगे। इससे गंदगी और रोगों के फैलने की समस्या समझाएँगे। समाधान के रूप में कूड़े का पृथक्करण, निर्धारित स्थान पर निस्तारण और सामूहिक जागरूकता सुझाएँगे। भाषा आरोप लगाने वाली नहीं, नागरिक उत्तरदायित्व जगाने वाली रखेंगे।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र 25, विकास नगर
नई दिल्ली
12 जुलाई, 2018
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जनवाणी, नई दिल्ली
विषय : स्वच्छता अभियान के प्रति उपेक्षा पर चिंता।
महोदय,
आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं स्वच्छता अभियान के प्रति कुछ लोगों की उदासीनता पर चिंता व्यक्त करना चाहता हूँ। लोग सड़कों पर कूड़ा फेंकते हैं और सफाई को केवल कर्मचारियों का काम मानते हैं। इससे अभियान का उद्देश्य बाधित होता है तथा रोग फैलने का खतरा बढ़ता है।

स्वच्छ वातावरण प्रत्येक नागरिक की आवश्यकता है। हमें गीला और सूखा कूड़ा अलग रखना, निर्धारित स्थान पर कचरा डालना तथा सार्वजनिक स्थलों को साफ रखना चाहिए। विद्यालयों और मोहल्लों में जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित हों। प्रशासन नियमित सफाई सुनिश्चित करे और नागरिक अपनी जिम्मेदारी निभाएँ।

कृपया इस विषय को अपने पत्र में स्थान देकर जनचेतना बढ़ाएँ।

धन्यवाद।

भवदीय,

अमित कुमार

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में स्वच्छता अभियान की उपेक्षा पर चिंता व्यक्त करते हुए नागरिक सहभागिता, उचित कचरा प्रबंधन और जनजागरण का आग्रह किया गया है। औपचारिक प्रारूप तथा विनम्र भाषा इसके उद्देश्य के अनुरूप हैं।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र लिखते समय समस्या, उसका सार्वजनिक प्रभाव और दो व्यावहारिक उपाय जोड़ें; पता, विषय तथा समापन अवश्य जाँचें।

4(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : क्यों पढ़ूँ मैं हिंदी [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारात्मक अनुच्छेद में एक मुख्य विचार का क्रमबद्ध विस्तार होता है। प्रभावी आरंभ, विषय से जुड़े तर्क और सार्थक अंतिम वाक्य उसे संगठित बनाते हैं।
- इस विषय में हिंदी पढ़ने का व्यक्तिगत, सांस्कृतिक और व्यावहारिक महत्त्व स्पष्ट करना है। अन्य भाषाओं का सम्मान करते हुए हिंदी के अध्ययन की उपयोगिता समझाना उचित होगा।

चरण 1: अनुच्छेद की रूपरेखा आरंभ में प्रश्न का सीधा उत्तर देंगे कि हिंदी हमारी अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक पहचान की भाषा है। आगे साहित्य, सामाजिक संपर्क, ज्ञान तथा रोजगार में उसकी भूमिका बताएँगे। अंत में हिंदी सीखने को संकीर्णता से अलग करके बहुभाषिक व्यक्तित्व के विकास से जोड़ेंगे।

चरण 2: भाषा और प्रस्तुति का ध्यान विषय प्रथम पुरुष में दिया गया है, इसलिए विचारों को अपने अनुभव और आवश्यकता से जोड़ना उपयुक्त है। अनुच्छेद में अनावश्यक उपशीर्षक या बिंदु नहीं देंगे। वाक्यों में विचारों की स्वाभाविक कड़ी रखेंगे। हिंदी की उपयोगिता समझाते समय किसी अन्य भाषा को छोटा नहीं दिखाएँगे और लगभग 150 शब्दों में विषय का संतुलित विकास करेंगे।

चरण 3: पूर्ण आदर्श अनुच्छेद **क्यों पढ़ूँ मैं हिंदी**

मैं हिंदी इसलिए पढ़ूँ कि यह मेरे विचारों, अनुभवों और भावनाओं को सहज अभिव्यक्ति देती है। इसके माध्यम से मैं अपने परिवार, समाज और देश के बड़े जनसमूह से जुड़ सकता हूँ। हिंदी साहित्य पढ़ने पर कबीर की निर्भीकता, प्रेमचंद की सामाजिक दृष्टि और महादेवी की संवेदना से परिचय होता है। इससे मेरी कल्पना, समझ और मानवीय संवेदना विकसित होती है। हिंदी हमारे इतिहास, लोकजीवन और सांस्कृतिक परंपराओं तक पहुँचने का महत्त्वपूर्ण माध्यम भी है। आज पत्रकारिता, अनुवाद, अध्यापन, विज्ञापन और डिजिटल संचार में हिंदी जानने वालों के लिए अनेक अवसर हैं। हिंदी पढ़ने का अर्थ अन्य भाषाओं से दूरी बनाना नहीं है। मैं दूसरी भाषाएँ सीखते हुए अपनी भाषा में भी सक्षम बनना चाहता हूँ। अपनी बात शुद्ध, स्पष्ट और प्रभावी ढंग से कहना जीवन की बड़ी आवश्यकता है। इसलिए हिंदी मेरे लिए केवल परीक्षा का विषय नहीं, आत्मविश्वास, ज्ञान और व्यापक सामाजिक संवाद का सशक्त साधन है।

चरण 4: निष्कर्ष हिंदी का अध्ययन अभिव्यक्ति, साहित्यिक संवेदना, सांस्कृतिक समझ और व्यावहारिक अवसरों को समृद्ध करता है। अनुच्छेद इन्हीं कारणों को व्यक्तिगत दृष्टिकोण से एक सूत्र में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: ऐसे विषय में केवल भाषा की प्रशंसा न करें; अभिव्यक्ति, साहित्य और व्यवहार से जुड़े ठोस कारण दें तथा एक अनुच्छेद में विचारों को जोड़ें।

4(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : परिश्रम का कोई विकल्प नहीं [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद किसी एक केंद्रीय विचार का क्रमबद्ध और सुसंगत विस्तार होता है। इसमें आरंभ, विचारों का विकास और निष्कर्ष परस्पर जुड़े रहते हैं।
- प्रश्न में लगभग 150 शब्दों का निर्देश है। भाषा सरल, विषयानुकूल और प्रभावशाली रखें तथा अनावश्यक विस्तार और पुनरावृत्ति से बचें।

चरण 1: विषय और रूपरेखा निर्धारित करना मुख्य विचार यह है कि स्थायी सफलता के लिए नियमित और सही दिशा में किया गया श्रम आवश्यक है। किसान, विद्यार्थी और खिलाड़ी के परिचित उदाहरण इस विचार को स्पष्ट करते हैं। अनुच्छेद का शीर्षक विषय के अनुरूप रखें। आरंभ में विषय का संकेत दें, बीच में उपयुक्त अनुभव अथवा उदाहरण प्रस्तुत करें और अंत में मुख्य विचार को पूर्ण करें।

चरण 2: भाषा और प्रस्तुति की योजना विषय को केवल भाग्य की निंदा तक सीमित न रखें। लक्ष्य, समय के सदुपयोग, अभ्यास और असफलता से सीखने को जोड़ें। इससे अनुच्छेद उपदेशों की सूची बनने के बजाय तर्कपूर्ण और उपयोगी बनता है। एक ही अनुच्छेद में विचारों का स्वाभाविक क्रम बनाए रखें। छोटे तथा स्पष्ट वाक्य लिखें, विराम-चिह्नों का सही प्रयोग करें और अंतिम वाक्य को पूरे अनुच्छेद के भाव से जोड़ें।

चरण 3: पूरा आदर्श अनुच्छेद **परिश्रम का कोई विकल्प नहीं**

परिश्रम सफलता की वह कुंजी है, जिससे जीवन के कठिन द्वार भी खुल जाते हैं। केवल प्रतिभा, साधन या भाग्य के सहारे स्थायी उपलब्धि प्राप्त नहीं की जा सकती। खेत में किसान का पसीना, परीक्षा के लिए विद्यार्थी का नियमित अध्ययन और खिलाड़ी का निरंतर अभ्यास इसी सत्य को प्रमाणित करते हैं। सफलता प्रायः लंबे संघर्ष के बाद मिलती है; इसलिए असफलता से घबराकर प्रयास छोड़ना उचित नहीं। वह हमारी कमियों को पहचानने और उन्हें सुधारने का अवसर देती है। परिश्रम का अर्थ बिना सोचे लगातार काम करना भी नहीं है। स्पष्ट लक्ष्य, सही योजना, समय का सदुपयोग और नियमित अभ्यास मेहनत को सार्थक बनाते हैं। आज सुविधाओं तथा त्वरित सफलता के आकर्षण के बीच हमें समझना चाहिए कि अनुचित रास्ते सम्मान नहीं दिला सकते। ईमानदारी से किया गया श्रम आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता बढ़ाता है। अतः हमें भाग्य की प्रतीक्षा करने के बजाय अपनी क्षमता के अनुसार प्रतिदिन प्रयास करना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष उपर्युक्त अनुच्छेद में विषय का क्रमबद्ध विकास करते हुए लगभग 150 शब्दों में पूर्ण अभिव्यक्ति दी गई है। केंद्रीय विचार, उपयुक्त उदाहरण और विषयानुकूल समापन इसकी एकसूत्रता बनाए रखते हैं।

त्वरित सुझाव: लिखने से पहले आरंभ, दो या तीन मुख्य बिंदु और समापन सोच लें; फिर लगभग 150 शब्दों में उन्हें एक सुसंगत अनुच्छेद में जोड़ें।

4(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : मोबाइल के बिन एक दिन [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद किसी एक केंद्रीय विचार का क्रमबद्ध और सुसंगत विस्तार होता है। इसमें आरंभ, विचारों का विकास और निष्कर्ष परस्पर जुड़े रहते हैं।
- प्रश्न में लगभग 150 शब्दों का निर्देश है। भाषा सरल, विषयानुकूल और प्रभावशाली रखें तथा अनावश्यक विस्तार और पुनरावृत्ति से बचें।

चरण 1: विषय और रूपरेखा निर्धारित करना यह विषय दैनिक अनुभव पर आधारित रचनात्मक अनुच्छेद माँगता है। एक दिन की घटनाओं को सुबह से रात तक जोड़कर आरंभिक बेचैनी, नए अनुभव और अंत में मिली सीख प्रस्तुत की जा सकती है। अनुच्छेद का शीर्षक विषय के अनुरूप रखें। आरंभ में विषय का संकेत दें, बीच में उपयुक्त अनुभव अथवा उदाहरण प्रस्तुत करें और अंत में मुख्य विचार को पूर्ण करें।

चरण 2: भाषा और प्रस्तुति की योजना मोबाइल के लाभ और हानि की सामान्य सूची देने के स्थान पर मोबाइल के बिना बीते दिन का वर्णन करें। परिवार, पढ़ाई, पुस्तक और बाहर की गतिविधियों जैसे अनुभव जोड़ें तथा आवश्यक संपर्क में आई कठिनाई भी स्वीकार करें।

एक ही अनुच्छेद में विचारों का स्वाभाविक क्रम बनाए रखें। छोटे तथा स्पष्ट वाक्य लिखें, विराम-चिह्नों का सही प्रयोग करें और अंतिम वाक्य को पूरे अनुच्छेद के भाव से जोड़ें।

चरण 3: पूरा आदर्श अनुच्छेद **मोबाइल के बिन एक दिन**

कल सुबह मेरा मोबाइल अचानक खराब हो गया। पहले तो लगा कि पूरा दिन अधूरा रह जाएगा। संदेश कैसे देखूँगा, मित्रों से संपर्क कैसे होगा और खाली समय कैसे बीतेगा? कुछ देर की बेचैनी के बाद मैंने घरवालों के साथ बैठकर नाश्ता किया। दादी की बातें सुनीं और माँ के काम में हाथ बँटाया। पढ़ने बैठा तो बार-बार सूचना आने से ध्यान नहीं भटका और काम जल्दी पूरा हो गया। दोपहर में अलमारी से एक पुरानी कहानी की पुस्तक निकाली। शाम को मित्र से मिलने उसके घर गया और फिर पार्क में टहलने निकला। पेड़ों, पक्षियों और आसपास खेलते बच्चों को देखने का आनंद अलग ही था। हालाँकि एक आवश्यक सूचना समय पर न मिल पाने की असुविधा भी हुई। रात को लगा कि मोबाइल उपयोगी साधन है, पर उसके बिना भी जीवन सुंदर है। अब मैंने तय किया है कि मोबाइल का उपयोग आवश्यकता के अनुसार करूँगा और संबंधों तथा अपने लिए समय अवश्य बचाऊँगा।

चरण 4: निष्कर्ष उपर्युक्त अनुच्छेद में विषय का क्रमबद्ध विकास करते हुए लगभग 150 शब्दों में पूर्ण अभिव्यक्ति दी गई है। केंद्रीय विचार, उपयुक्त उदाहरण और विषयानुकूल समापन इसकी एकसूत्रता बनाए रखते हैं।

त्वरित सुझाव: लिखने से पहले आरंभ, दो या तीन मुख्य बिंदु और समापन सोच लें; फिर लगभग 150 शब्दों में उन्हें एक सुसंगत अनुच्छेद में जोड़ें।

4(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : किसान का एक दिन [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद में एक केंद्रीय विषय को क्रमबद्ध और सुसंगत रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ किसान की दिनचर्या के माध्यम से उसका श्रम, प्रकृति पर निर्भरता और समाज के लिए योगदान स्पष्ट करना है।
- लगभग 150 शब्दों की सीमा में सुबह से रात तक की गतिविधियाँ एक ही अनुच्छेद में लिखनी चाहिए। भाषा सरल, चित्रात्मक और विषय के अनुरूप संवेदनशील हो।

चरण 1: विषय का क्रम और मुख्य बिंदु चुनना शुरुआत किसान के भोर में जागने से करें। इसके बाद खेत की तैयारी, सिंचाई, फसल की देखभाल और दोपहर के विश्राम का क्रम रखें। अंत में आर्थिक चिंता तथा अगले दिन के प्रति उसकी आशा जोड़ें। इससे अनुच्छेद केवल कामों की सूची नहीं रहेगा; किसान के जीवन और मनोभाव का परिचय भी देगा। सभी किसानों की परिस्थितियाँ एक जैसी नहीं होतीं, इसलिए इसे एक किसान के सामान्य कार्यदिवस का चित्र बनाकर लिखें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श अनुच्छेद **किसान का एक दिन**

भोर की पहली किरण के साथ किसान का दिन शुरू हो जाता है। वह पशुओं को चारा देकर खेत की ओर निकल पड़ता है। ठंडी हवा और पक्षियों का कलरव उसका स्वागत करते हैं। खेत पहुँचकर वह मिट्टी की नमी देखता है और फसल की आवश्यकता के अनुसार सिंचाई करता है। कभी निराई करनी होती है, कभी खाद डालनी होती है। धूप तेज होने पर भी उसके हाथ नहीं रुकते। दोपहर में पेड़ की छाँव तले घर से लाई रोटी और सब्जी खाकर वह कुछ देर विश्राम करता है। फिर मेड़ों की मरम्मत और पौधों की देखभाल में जुट जाता है। शाम ढलने पर थका शरीर लेकर घर लौटता है, पर परिवार के बीच उसकी थकान हल्की हो जाती है। रात को वह मौसम, बीज और फसल के उचित मूल्य की चिंता करता है। फिर भी अगली सुबह की आशा उसे संबल देती है। उसका परिश्रम ही हमारी थाली तक अन्न पहुँचाता है।

चरण 3: निष्कर्ष यह अनुच्छेद किसान की दिनचर्या को सुबह से रात तक क्रम में प्रस्तुत करता है और उसके श्रम के सामाजिक महत्त्व पर समाप्त होता है।

त्वरित सुझाव: किसान की दिनचर्या लिखते समय समयक्रम बनाए रखें और अंतिम वाक्य को उसके श्रम तथा अन्न उत्पादन के महत्त्व से जोड़ें।

5. 'चुनावों का मौसम' विषय पर एक फीचर 150 शब्दों में लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी विषय के मानवीय और रोचक पक्ष को चित्रात्मक भाषा में सामने लाता है। चुनावों पर लिखते समय वातावरण, आम लोगों की प्रतिक्रियाएँ और लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व प्रमुख बिंदु हैं।
- आकर्षक शीर्षक, लेखक का नाम, दृश्यात्मक शुरुआत और विचारपूर्ण अंत फ़ीचर को प्रभावी बनाते हैं। इसे किसी दल के प्रचार में बदलने के बजाय नागरिक जीवन से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: प्रस्तुति और विषयवस्तु की योजना पहले चुनावी हलचल का कोई जीवंत दृश्य प्रस्तुत करें। फिर प्रचार, चर्चाओं और जनता की अपेक्षाओं को जोड़ें। अंतिम हिस्से में मतदाता के विवेक की भूमिका सामने आए। यह फ़ीचर है, इसलिए केवल घटनाओं और तिथियों की सूचना देना पर्याप्त नहीं है। भाषा में सहजता, लोगों से जुड़ाव और विचार का प्रवाह होना चाहिए। लगभग 150 शब्दों के मुख्य पाठ में शीर्षक तथा लेखक-पंक्ति अलग रखी जा सकती है।

चरण 2: पूर्ण आदर्श फ़ीचर **चुनावों का मौसम : वादों के बीच जनता की आवाज़**

लेखक : अजय

गली के नुक्कड़ पर आज चाय से अधिक गरम चुनावी चर्चा है। कोई उम्मीदवारों के वादे गिना रहा है, तो कोई पिछले कामों का हिसाब माँग रहा है। सड़कों पर झंडे लहरा रहे हैं और सभाओं में नारों की गूँज है। घरों के दरवाजों पर दस्तक देते प्रत्याशी अचानक सबके परिचित बन गए हैं।

इस रंगीन हलचल के पीछे आम आदमी की उम्मीदें हैं। किसान को फसल का उचित मूल्य चाहिए, युवा को रोजगार और बच्चों को बेहतर विद्यालय। चुनाव इन जरूरतों को सार्वजनिक बहस का हिस्सा बनाते हैं। लेकिन ऊँचे वादों और आकर्षक प्रचार के बीच वास्तविक मुद्दे कभी पीछे भी छूट जाते हैं।

ऐसे में मतदाता की सजगता ही लोकतंत्र की ताकत है। उसे अफवाहों से बचकर उम्मीदवारों के काम और नीतियों को परखना होगा। मतदान का दिन छुट्टी भर नहीं, भविष्य चुनने का अवसर है। चुनावों का मौसम तभी सार्थक होगा, जब उत्साह के साथ विवेक भी मतदान केंद्र पहुँचेगा।

चरण 3: निष्कर्ष प्रस्तुत फ़ीचर चुनावी वातावरण का चित्र खींचते हुए जनता की आशाओं और जिम्मेदार मतदान का संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: चुनाव पर फ़ीचर की शुरुआत जीवंत दृश्य से करें और अंत मतदाता की जिम्मेदारी से जोड़ें; केवल नारों या वादों की सूची न बनाएँ।

6. हाल ही में आपके द्वारा पढ़ी गई किसी कहानी की पुस्तक की संतुलित समीक्षा लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संतुलित समीक्षा में पुस्तक का परिचय, विषयवस्तु, भाषा, प्रमुख विशेषताएँ तथा सीमाएँ तर्क और उदाहरण के साथ प्रस्तुत की जाती हैं।
- कहानी-संग्रह की समीक्षा केवल कथासार नहीं है; उसमें पाठक के लिए पुस्तक की उपयोगिता का मूल्यांकन भी होना चाहिए।

चरण 1: समीक्षा की रूपरेखा प्रेमचंद के कहानी-संग्रह 'मानसरोवर' को आधार बनाकर लेखक और विधा का परिचय दें। फिर चुनी हुई कहानियों से सामाजिक दृष्टि, चरित्र-चित्रण और भाषा की विशेषताएँ समझाएँ। अंत में सीमाओं का संयत उल्लेख करके अपना मूल्यांकन प्रस्तुत करें।

चरण 2: विषयवस्तु और संतुलन की योजना 'ईदगाह' में हामिद की संवेदना, 'पूस की रात' में किसान की विवशता और 'कफ़न' में गरीबी तथा संवेदनहीनता के जटिल संबंध का उल्लेख किया जा सकता है। कथाओं के अंत या पुराने परिवेश संबंधी अपनी कठिनाई को निजी पाठकीय अनुभव की तरह रखें, सार्वभौम दोष की तरह नहीं।

चरण 3: पूर्ण आदर्श समीक्षा मानवीय संवेदना का जीवंत संसार : मानसरोवर

हाल ही में मैंने प्रेमचंद का कहानी-संग्रह 'मानसरोवर' पढ़ा। इस संग्रह की कहानियाँ साधारण लोगों के जीवन, संघर्ष और मनोभावों को प्रभावशाली ढंग से सामने लाती हैं। किसान, मजदूर, बच्चे और उपेक्षित स्त्रियाँ यहाँ केवल पात्र नहीं, अपने समय और समाज के प्रतिनिधि बनकर उभरते हैं।

'ईदगाह' में हामिद का दादी के लिए चिमटा खरीदना प्रेम और त्याग की मार्मिक अभिव्यक्ति है। 'पूस की रात' किसान की निर्धनता और असुरक्षा को उजागर करती है। 'कफ़न' गरीबी और मनुष्य की संवेदनहीनता के संबंध पर असहज प्रश्न उठाती है। इन कथाओं की शक्ति उनके स्वाभाविक संवाद, विश्वसनीय पात्र और जीवन से जुड़ी घटनाएँ हैं। भाषा सरल, मुहावरेदार और पात्रों के अनुरूप है।

फिर भी कुछ कहानियों में नैतिक संदेश अधिक स्पष्ट हो जाने से पाठक के स्वतंत्र निष्कर्ष की गुंजाइश घटती है। पुराने ग्रामीण परिवेश के कुछ व्यवहार समझने के लिए आज के पाठक को ऐतिहासिक संदर्भ जानना पड़ सकता है। ये सीमाएँ संग्रह की मानवीय महत्ता कम नहीं करतीं।

मेरे विचार में 'मानसरोवर' मनोरंजन के साथ सामाजिक विषमता और मनुष्य की गरिमा पर विचार करना सिखाता है। संवेदनशील साहित्य में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए यह पठनीय संग्रह है।

चरण 4: निष्कर्ष समीक्षा में पुस्तक के गुणों और सीमाओं, दोनों का उदाहरण सहित विवेचन करके स्पष्ट पाठकीय मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: समीक्षा लिखते समय केवल कहानी सुनाने के बजाय एक उदाहरण के साथ गुण और एक संयत सीमा अवश्य लिखें।

अथवा

6. 'बदलता ग्रामीण परिवेश' विषय पर एक आलेख 150 शब्दों में लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में विषय से जुड़ी स्थिति, उसके कारण, प्रभाव और सुधार की दिशा व्यवस्थित अनुच्छेदों में प्रस्तुत की जाती है।
- 150 शब्दों के आलेख में ग्रामीण विकास के लाभ और उभरती चुनौतियों, दोनों का संतुलित विवेचन आवश्यक है।

चरण 1: प्रारूप तय करें आलेख के ऊपर विषयानुकूल शीर्षक और लेखक का नाम रखें। मुख्य भाग में पहले ग्रामीण जीवन में आए परिवर्तनों का परिचय, फिर उनके लाभ और समस्याएँ तथा अंत में व्यावहारिक सुझाव दें। लेखक के नाम को मूल आलेख की शब्द-संख्या में न जोड़ें।

चरण 2: सामग्री और शब्द-सीमा की योजना सड़क, बिजली, शिक्षा, मोबाइल और आधुनिक कृषि जैसे बदलावों में से कुछ प्रमुख बिंदु चुनें। रोजगार और अवसरों के साथ पलायन, पर्यावरण तथा सामाजिक संबंधों पर प्रभाव जोड़ें। हर बिंदु का अलग लंबा वर्णन करने के बजाय संबंधित विचारों को एक साथ रखें। नीचे दिया गया मुख्य आलेख लगभग 150 शब्दों का है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श आलेख बदलता ग्रामीण परिवेश लेखक : अजय

भारत के गाँव बदल रहे हैं। पक्की सड़कों, बिजली, मोबाइल और इंटरनेट ने ग्रामीण जीवन को नई गति दी है। किसान मौसम, बाजार और सरकारी योजनाओं की जानकारी आसानी से प्राप्त कर रहे हैं। आधुनिक उपकरणों से खेती के तरीके बदले हैं। विद्यालयों और स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार ने लोगों की आशाएँ बढ़ाई हैं।

महिलाओं के स्वयं सहायता समूह और छोटे उद्योग आर्थिक आत्मनिर्भरता के नए अवसर दे रहे हैं। फिर भी विकास के लाभ सबको समान रूप से नहीं मिले हैं। बेरोजगारी और खेती की अनिश्चित आय युवाओं को शहरों की ओर धकेलती हैं। उपभोक्तावाद, जलसंकट और घटता आपसी मेलजोल भी चिंताजनक हैं।

ग्रामीण प्रगति तभी सार्थक होगी जब गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्थानीय रोजगार, उचित कृषि मूल्य और स्वच्छ पर्यावरण सुनिश्चित हों। तकनीक के साथ सहयोग और सामुदायिक संबंधों को बचाना आवश्यक है। बदलते गाँव अपनी सांस्कृतिक पहचान सँजोकर आधुनिक सुविधाएँ अपनाएँ, तभी विकास टिकाऊ, समावेशी और मानवीय बन सकेगा।

चरण 4: निष्कर्ष आलेख ग्रामीण परिवर्तन के लाभ, असमानताओं और टिकाऊ विकास की आवश्यकता को निर्धारित शब्द-सीमा के

अनुरूप प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: 150 शब्दों में लिखते समय भूमिका छोटी रखें और लाभ, चुनौती तथा समाधान को अलग अनुच्छेद दें।

7(क). निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 20-30 शब्दों में दीजिए : संपादकीय किसे कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय समाचार-पत्र की वैचारिक अभिव्यक्ति है; वह किसी सामयिक मुद्दे पर विश्लेषण और संस्थागत मत प्रस्तुत करता है।
- परिभाषा में विषय की सामयिकता और समाचार-पत्र का दृष्टिकोण, दोनों स्पष्ट होने चाहिए।

चरण 1: मुख्य पहचान यह प्रश्न संपादकीय की परिभाषा पूछता है। इसलिए किसी घटना का केवल विवरण देने के बजाय उस पर समाचार-पत्र की राय और विश्लेषण का उल्लेख आवश्यक है।

चरण 2: 20-30 शब्दों में उत्तर किसी समसामयिक विषय या घटना पर समाचार-पत्र के दृष्टिकोण, विश्लेषण और मत को व्यक्त करने वाला विचारप्रधान लेख संपादकीय कहलाता है।

चरण 3: निष्कर्ष संपादकीय में किसी सामयिक विषय पर समाचार-पत्र का विचारपूर्ण मत व्यक्त होता है।

त्वरित सुझाव: संपादकीय की परिभाषा में समाचार-पत्र का दृष्टिकोण अवश्य लिखें; केवल समाचार का विवरण कहना अधूरा होगा।

7(ख). निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 20-30 शब्दों में दीजिए : पत्रकारिता का मूल तत्त्व क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार पत्रकारिता का मूल तत्त्व है।
- उत्तर प्रश्न की माँग के अनुरूप संक्षिप्त और स्पष्ट रखना आवश्यक है।

चरण 1: प्रश्न का आधार समझें पत्रकारिता समाज की नवीन, महत्त्वपूर्ण और जनहित से जुड़ी घटनाओं की सूचना देती है। इसलिए इसकी बुनियाद समाचार पर टिकी होती है।

चरण 2: उत्तर के मुख्य बिंदु चुनें तथ्य की सत्यता, निष्पक्षता और नवीनता समाचार को विश्वसनीय बनाती हैं। संपादकीय टिप्पणी या मनोरंजन पत्रकारिता में हो सकते हैं, पर मूल आधार समाचार ही रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष पत्रकारिता का मूल तत्त्व समाचार है। इसके माध्यम से जनता तक नवीन, सत्य, महत्त्वपूर्ण और जनहित से संबंधित घटनाओं तथा तथ्यों की जानकारी पहुँचती है।

त्वरित सुझाव: मूल तत्त्व पूछे जाने पर पहले समाचार लिखें और फिर उसकी सूचना देने की भूमिका स्पष्ट करें।

7(ग). निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 20-30 शब्दों में दीजिए : जनसंचार के दो कार्यों का उल्लेख कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनसंचार व्यापक जनसमुदाय तक सूचना और ज्ञान पहुँचाता है।

- उत्तर प्रश्न की माँग के अनुरूप संक्षिप्त और स्पष्ट रखना आवश्यक है।

चरण 1: प्रश्न का आधार समझें प्रमुख घटनाओं और गतिविधियों की जानकारी देना जनसंचार का सूचना संबंधी कार्य है। इससे लोग अपने आसपास और देश-दुनिया की घटनाओं से परिचित होते हैं।

चरण 2: उत्तर के मुख्य बिंदु चुनें जनसंचार का दूसरा प्रमुख कार्य शिक्षा देना है। स्वास्थ्य, पर्यावरण या नागरिक अधिकारों की जानकारी लोगों की समझ बढ़ाती है। प्रश्न में केवल दो कार्य माँगे गए हैं।

चरण 3: निष्कर्ष जनसंचार के दो प्रमुख कार्य हैं—देश-दुनिया की घटनाओं की सूचना देना तथा उपयोगी ज्ञान पहुँचाकर जनता को शिक्षित करना और उसकी जागरूकता बढ़ाना।

त्वरित सुझाव: दो कार्य अलग-अलग पहचानें; केवल माध्यमों के नाम लिखने से कार्यों का उत्तर नहीं बनता।

7(घ). निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 20-30 शब्दों में दीजिए : रेडियो-समाचारों की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; श्रोता समाचार सुनकर समझता है।
- उत्तर प्रश्न की माँग के अनुरूप संक्षिप्त और स्पष्ट रखना आवश्यक है।

चरण 1: प्रश्न का आधार समझें रेडियो-समाचार की भाषा सरल और बोलचाल के निकट होनी चाहिए। कठिन, अपरिचित शब्दों से श्रोता का ध्यान अर्थ समझने में उलझ सकता है।

चरण 2: उत्तर के मुख्य बिंदु चुनें वाक्य छोटे, स्पष्ट और सीधे होने चाहिए। श्रोता पढ़े हुए पृष्ठ की तरह पीछे लौटकर वाक्य नहीं देख सकता, इसलिए एक बार सुनने पर अर्थ समझ में आना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो-समाचारों की भाषा सरल, सहज और बोलचाल के निकट होती है। उसके वाक्य छोटे और स्पष्ट होते हैं, ताकि सुनते ही अर्थ समझ आ जाए।

त्वरित सुझाव: भाषा की विशेषताओं को सुनने की सुविधा से जोड़ें; सरल शब्द और छोटे वाक्य याद रखें।

7(ङ). निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 20-30 शब्दों में दीजिए : प्रिंट मीडिया किसे कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुद्रित सामग्री के माध्यम से सूचना का प्रसार प्रिंट मीडिया कहलाता है।
- उत्तर प्रश्न की माँग के अनुरूप संक्षिप्त और स्पष्ट रखना आवश्यक है।

चरण 1: प्रश्न का आधार समझें प्रिंट का अर्थ मुद्रण से है। इस माध्यम में समाचार, विचार और अन्य सामग्री छपकर पाठकों तक पहुँचती है तथा पढ़कर ग्रहण की जाती है।

चरण 2: उत्तर के मुख्य बिंदु चुनें समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ इसके प्रमुख उदाहरण हैं। रेडियो की पहचान श्रव्य प्रसारण और टेलीविजन की पहचान दृश्य-श्रव्य प्रसारण है; यहाँ पहचान मुद्रित सामग्री है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार, विचार और सूचनाओं को छपे हुए रूप में जनता तक पहुँचाने वाले माध्यम प्रिंट मीडिया कहलाते हैं। समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में छपे हुए रूप का उल्लेख करें और समाचार-पत्र या पत्रिका का उदाहरण अवश्य दें।

8. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक लगभग 30 शब्दों में दीजिए :

हम आज देश के लिए क्या करते हैं ? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है । अपना स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है । हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर, अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं ? काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी-की-फूटी रह जाती है, बैल पियासे-के-पियासे रह जाते हैं ? आखिर कब बदलेगी यह स्थिति ? [8 अंक]

8(क). भ्रष्टाचार की चर्चा करते हुए लेखक क्या अपेक्षा करता है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में लेखक की अपेक्षा तथा उसका कारण दोनों स्पष्ट करने हैं।
- उत्तर प्रश्न की माँग के अनुरूप संक्षिप्त और स्पष्ट रखना आवश्यक है।

चरण 1: प्रश्न का आधार समझें लेखक दूसरों के भ्रष्टाचार की चर्चा करने वाले लोगों से अपने आचरण की जाँच चाहता है। गद्यांश का प्रश्न है कि हम अपने स्तर पर उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं। इससे आत्मपरीक्षण की अपेक्षा स्पष्ट होती है।

चरण 2: उत्तर के मुख्य बिंदु चुनें इस अपेक्षा का कारण समाज में फैली स्वार्थपरता है। दूसरों को दोष देना आसान है, किंतु स्वयं के व्यवहार में भ्रष्ट आचरण बने रहने पर समस्या दूर नहीं हो सकती। लेखक आलोचना के साथ व्यक्तिगत उत्तरदायित्व जोड़ता है। लेखक का संकेत है कि सुधार की शुरुआत स्वयं से होनी चाहिए। अपनी छोटी बेईमानियों की अनदेखी करके केवल दूसरों की निंदा करना वास्तविक नैतिक सुधार नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक अपेक्षा करता है कि दूसरों के भ्रष्टाचार की चर्चा करते समय हम अपना आचरण भी जाँचें, क्योंकि अपने स्तर पर हम स्वयं भी भ्रष्टाचार में सहभागी हो सकते हैं।

त्वरित सुझाव: क्या अपेक्षा और क्यों के उत्तर अलग पहचानें; आत्मपरीक्षण को अपनी संभावित भागीदारी से जोड़ें।

8(ख). आपके विचार से यह स्थिति कब और कैसे बदलेगी ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अपने विचार गद्यांश में उठी स्वार्थ, त्याग और भ्रष्टाचार की समस्या से जोड़ने हैं।
- उत्तर प्रश्न की माँग के अनुरूप संक्षिप्त और स्पष्ट रखना आवश्यक है।

चरण 1: प्रश्न का आधार समझें गद्यांश में बड़ी माँगों के साथ त्याग के अभाव और स्वार्थ को एकमात्र लक्ष्य बनाने की आलोचना है। अत: स्थिति बदलने के लिए केवल दूसरों से अपेक्षा करना पर्याप्त नहीं; व्यक्ति को अपना आचरण बदलना होगा।

चरण 2: उत्तर के मुख्य बिंदु चुनें ईमानदारी, आत्मपरीक्षण और सामाजिक दायित्व की भावना से परिवर्तन संभव है। जब लोग अपने स्तर पर भ्रष्टाचार में भाग न लें और सामूहिक हित के लिए योगदान दें, तभी उपलब्ध साधनों का लाभ जरूरतमंदों तक पहुँचेगा। बदलाव के लिए अपने व्यवहार में सार्वजनिक हित को स्थान देना आवश्यक है। केवल माँग करने की जगह देश और समाज के लिए योगदान करना इस स्थिति को बदलने का रास्ता है।

चरण 3: निष्कर्ष यह स्थिति तब बदलेगी जब हम स्वार्थ छोड़कर अपने आचरण की जाँच करेंगे, भ्रष्टाचार से दूर रहेंगे और देशहित में ईमानदारी, त्याग तथा जिम्मेदारी से काम करेंगे।

त्वरित सुझाव: अपने विचार को गद्यांश के संकेतों से बाँधें: स्वार्थ का त्याग, आत्मपरीक्षण और जिम्मेदार आचरण।

8(ग). लेखक के अनुसार आज हमारे समाज में कैसी प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक की आलोचना का आधार समाज की स्वार्थपूर्ण और परदोष-दर्शन की प्रवृत्ति है।
- उत्तर प्रश्न की माँग के अनुरूप संक्षिप्त और स्पष्ट रखना आवश्यक है।

चरण 1: प्रश्न का आधार समझें लेखक कहता है कि हर क्षेत्र में माँगें बड़ी हैं, लेकिन त्याग दिखाई नहीं देता। इससे पता चलता है कि लोग देश को योगदान देने की अपेक्षा अपने लाभ और सुविधाओं पर अधिक ध्यान देते हैं।

चरण 2: उत्तर के मुख्य बिंदु चुनें लोग दूसरों के भ्रष्टाचार की चर्चा चटखारे लेकर करते हैं, किंतु अपने आचरण को नहीं परखते। इसलिए कथन में स्वार्थपरता के साथ जिम्मेदारी से बचने और केवल दूसरों को दोष देने की प्रवृत्ति भी उभरती है। यहाँ समाज की कथनी और करनी में अंतर सामने आता है। लोग स्वयं से त्याग की अपेक्षा नहीं रखते, जबकि दूसरों के दोषों पर बात करने में विशेष रुचि लेते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष आज समाज में स्वार्थपरता, बड़ी-बड़ी माँगें करने और त्याग से बचने की प्रवृत्ति है। लोग दूसरों के भ्रष्टाचार की चर्चा करते हैं, पर अपना आचरण नहीं जाँचते।

त्वरित सुझाव: समाज की प्रवृत्ति पूछे जाने पर माँग, त्याग और स्वार्थ के विरोध को उत्तर का आधार बनाएँ।

8(घ). 'बैल पियासे-के-पियासे रह जाते हैं' कथन से लेखक का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में वर्षा और प्यास का चित्र देश की संसाधन-संपन्नता तथा जनता की अधूरी आवश्यकताओं का प्रतीक है।
- कथन का आशय समझने के लिए उसके पहले आए स्वार्थ, त्याग के अभाव और भ्रष्टाचार के उल्लेख को साथ पढ़ना चाहिए।

चरण 1: प्रतीकों का संदर्भ मेघों का उमड़ना और पानी बरसना साधनों तथा सुविधाओं की उपलब्धता की ओर संकेत करता है। फूटी गगरी के कारण पानी का लाभ नहीं मिल पाता। इसी प्रकार स्वार्थ और भ्रष्टाचार के कारण उपलब्ध संसाधनों का उचित उपयोग नहीं हो पाता।

चरण 2: आशय स्पष्ट करें बैल की प्यास सामान्य श्रमशील जनता की अधूरी मूलभूत आवश्यकताओं का संकेत है। लेखक की चिंता यह है कि देश के लिए त्याग करने के स्थान पर लोग अपना स्वार्थ साध रहे हैं; फलतः जरूरतमंदों तक विकास का लाभ नहीं पहुँचता।

चरण 3: लगभग 30 शब्दों में उत्तर लेखक का आशय है कि पर्याप्त साधन उपलब्ध होने पर भी स्वार्थ और भ्रष्टाचार के कारण सामान्य जनता की आवश्यकताएँ पूरी नहीं होतीं। विकास का लाभ जरूरतमंदों तक नहीं पहुँच पाता।

चरण 4: निष्कर्ष यह कथन संसाधनों के बावजूद सामान्य जनता के अभावग्रस्त रहने और व्यवस्था के लाभ उस तक न पहुँचने की स्थिति व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: बैल की प्यास को केवल वर्षा की कमी न समझें; उसे गद्यांश में उल्लिखित स्वार्थ और भ्रष्टाचार से जोड़कर अर्थ लिखें।

9(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 30-40 शब्दों में दीजिए : 'बात सीधी थी' कविता में भाषा को सहूलियत से बरतने से कवि का क्या अभिप्राय है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता भाषा और कथ्य के सहज संबंध पर बल देती है।
- सहूलियत से भाषा बरतना विचार के अनुकूल सरल, स्वाभाविक और संप्रेषणीय अभिव्यक्ति अपनाना है।

चरण 1: कविता की समस्या समझें कविता में सीधी बात को भाषा के चक्कर में उलझा देने से उसका सहज अर्थ खो जाता है। चमत्कारपूर्ण अभिव्यक्ति का आग्रह बात को प्रभावी बनाने के स्थान पर अधिक जटिल कर देता है। इसलिए भाषा की सफलता उसके दिखावे में नहीं, अर्थ को पाठक तक पहुँचाने में है।

चरण 2: सहूलियत का अभिप्राय कवि का आग्रह है कि भाषा को अनावश्यक रूप से तोड़ा-मरोड़ा या उस पर जोर न लगाया जाए। विचार के लिए उपयुक्त शब्द सहज ढंग से चुने जाएँ। सरलता का अर्थ भावों की कमी नहीं है; इसका अर्थ है कि भाव स्पष्ट और स्वाभाविक रूप से व्यक्त हों।

चरण 3: भाव को संदर्भ से जोड़ें कवि का संकेत यह भी है कि अभिव्यक्ति पर अत्यधिक नियंत्रण का आग्रह उसे नष्ट कर सकता है। जैसे किसी वस्तु को जरूरत से ज्यादा कसने पर उसका काम बिगड़ जाता है, वैसे ही भाषा को अनावश्यक रूप से पेचीदा करने पर कथ्य दब जाता है। भाषा को विचार की सहायता करनी चाहिए।

चरण 4: 30-40 शब्दों में उत्तर भाषा को सहूलियत से बरतने का अभिप्राय है उसे सहज, सरल और स्वाभाविक रखना। कवि चाहते हैं कि अनावश्यक शब्दाडंबर तथा चमत्कार के आग्रह से बचकर बात का मूल भाव स्पष्ट और प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त किया जाए।

चरण 5: निष्कर्ष कवि भाषा की सहजता और अर्थ की स्पष्टता को महत्त्व देते हैं, ताकि सीधी बात शब्दों की उलझन में अपना प्रभाव न खो दे।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सहजता, स्पष्टता और अनावश्यक शब्दाडंबर से बचने के तीन जुड़े हुए विचार रखें; केवल सरल शब्दों का प्रयोग लिखकर न छोड़ें।

9(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 30-40 शब्दों में दीजिए : उमाशंकर जोशी की कविता में 'रस का अक्षय पात्र' किसे कहा गया है और क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उमाशंकर जोशी कविता-रचना की प्रक्रिया को खेती के रूपक से समझाते हैं।
- अक्षय का अर्थ है जो समाप्त न हो; काव्य का आनंद बार-बार ग्रहण किए जाने पर भी घटता नहीं है।

चरण 1: खेत के रूपक की पहचान कवि कागज के पन्ने को छोटा खेत मानते हैं। उस पर अनुभूति का बीज पड़ता है और कल्पना तथा शब्दों के माध्यम से काव्य का विकास होता है। इस रूपक में रचना के तैयार होने को फसल के रूप में देखा गया है; यह खाने योग्य सामान्य अन्न की चर्चा नहीं है।

चरण 2: अक्षयता का कारण समझें साधारण खेत की फसल कटते-कटते समाप्त हो जाती है, लेकिन कविता से मिलने वाला रस ऐसा नहीं है। पाठक उसे जितनी बार पढ़ते और अनुभव करते हैं, उतनी बार आनंद मिलता है। काव्य-रस की यह निरंतर उपलब्धता ही उसे अक्षय पात्र बनाती है।

चरण 3: भाव को संदर्भ से जोड़ें कविता में बोने और काटने की प्रक्रिया सृजन तथा रसास्वादन के बीच संबंध स्थापित करती है। पाठक का पढ़ना ही इस फसल का आनंद लेना है। अलग-अलग समय और अलग-अलग पाठकों द्वारा पढ़े जाने पर भी रचना में नए भाव अनुभव किए जा सकते हैं। इसलिए उसका भंडार भौतिक फसल की तरह खाली नहीं होता।

चरण 4: 30-40 शब्दों में उत्तर कवि ने कागज के पन्ने रूपी छोटे खेत में उपजी कविता को रस का अक्षय पात्र कहा है। उसका काव्य-रस

बार-बार पढ़ने और आनंद लेने पर भी समाप्त नहीं होता; पाठकों को निरंतर तृप्ति देता है।

चरण 5: निष्कर्ष कविता रस का अक्षय पात्र है, क्योंकि उसकी आनंददायिनी शक्ति बार-बार आस्वादन करने पर भी समाप्त नहीं होती।

त्वरित सुझाव: छोटा खेत, कविता की फसल और कभी न चुकने वाला रस—इन तीनों को जोड़कर उत्तर लिखें; अक्षय का अर्थ अवश्य स्पष्ट करें।

9(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 30-40 शब्दों में दीजिए : अट्टालिकाओं को आतंक का पर्याय कहने के पीछे कवि 'निराला' का क्या भाव है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला की कविता में बादल क्रांति और सामाजिक परिवर्तन के प्रतीक हैं।
- अट्टालिकाएँ संपन्न शोषक वर्ग के वैभव तथा गरीबों पर उसके प्रभुत्व का प्रतीक हैं।

चरण 1: अट्टालिकाओं का प्रतीकार्थ अट्टालिकाएँ केवल ऊँची इमारतें नहीं हैं। वे धनिकों और पूँजीपतियों की उस सत्ता का संकेत हैं जो गरीब श्रमिकों तथा किसानों के शोषण पर टिकी है। बाहर से भव्य दिखाई देने वाला यह वैभव वंचितों के जीवन में भय और दबाव पैदा करता है।

चरण 2: आतंक से संबंध स्पष्ट करें कवि की दृष्टि में संपन्न वर्ग के ऐश्वर्य के पीछे गरीबों की पीड़ा और अधिकारों का दमन छिपा है। इसलिए अट्टालिकाओं को आतंक का भवन कहा गया है। क्रांति का बादल इसी शोषणपूर्ण व्यवस्था को चुनौती देता है; उसकी गर्जना से धनिक वर्ग भयभीत होता है।

चरण 3: भाव को संदर्भ से जोड़ें इसके विपरीत किसान बादल को आशा के साथ पुकारता है, क्योंकि परिवर्तन से उसके जीवन को नया सहारा मिल सकता है। इस विरोध से कविता का सामाजिक पक्ष स्पष्ट होता है। जो व्यवस्था संपन्न वर्ग को सुरक्षा देती है, वही मेहनतकश वर्ग के लिए भय का कारण है; कवि इसी असमानता का विरोध करते हैं।

चरण 4: 30-40 शब्दों में उत्तर अट्टालिकाएँ शोषक पूँजीपतियों के वैभव और प्रभुत्व का प्रतीक हैं। उनका ऐश्वर्य गरीबों के शोषण तथा दमन पर टिका है। इसलिए कवि उन्हें आतंक का पर्याय कहते हैं; वे वंचित जनता में भय और असुरक्षा उत्पन्न करती हैं।

चरण 5: निष्कर्ष अट्टालिकाओं को आतंक का पर्याय कहकर कवि ने शोषण पर आधारित संपन्न वर्ग की सत्ता और उसके दमनकारी प्रभाव को उभारा है।

त्वरित सुझाव: अट्टालिका को केवल ऊँचा भवन न बताएँ; उसे शोषक वर्ग का प्रतीक मानकर गरीबों पर पड़ने वाला भय और दबाव स्पष्ट करें।

10. निम्नलिखित काव्यांश में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक लगभग 30 शब्दों में दीजिए ।

मैं और, और जग और कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज़ मिटाता;
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता !
मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ । [8 अंक]

10(क). कवि स्वयं को संसार से अलग क्यों मानता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में कवि के आत्मिक संसार तथा भौतिक संपत्ति जुटाने वाले समाज की तुलना की गई है।
- उत्तर काव्यांश के शब्द-संकेतों पर आधारित हो और प्रश्न में पूछे गए आशय को सीधे स्पष्ट करे।

चरण 1: भिन्न जीवन-मूल्य पहचानिए जग पृथ्वी पर वैभव जोड़ता है, जबकि कवि उसी पृथ्वी को ठुकराने की बात करता है। इसका आशय संपत्ति और सांसारिक प्रतिष्ठा के आकर्षण को अस्वीकार करना है। कवि का मूल्यांकन धन से नहीं, उसकी अनुभूति और रचनाशीलता से होता है।

चरण 2: कवि के स्वतंत्र संसार का आशय समझिए 'मैं बना-बना कितने जग रोज़ मिटाता' में उसकी कल्पना का स्वतंत्र संसार व्यक्त है। वह अपने भावों के अनुसार नए संसार रचता है। इसलिए उसकी इच्छाएँ और प्राथमिकताएँ धन-संचय में लगे समाज से मेल नहीं खातीं। प्रश्न का आधार यही वैचारिक अंतर है।

चरण 3: निष्कर्ष संसार धन-वैभव जोड़ने में लगा है, जबकि कवि उसे ठुकराकर भावनाओं और कल्पना का अपना संसार रचता है। जीवन-मूल्यों की इसी भिन्नता के कारण वह स्वयं को संसार से अलग मानता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में जग के वैभव-संचय और कवि की भाव-संपदा का सीधा अंतर स्पष्ट कीजिए।

10(ख). कवि ने खंडहर का भाग किसे कहा है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-प्रतीक का अर्थ उससे जुड़ी पंक्ति तथा कवि की जीवन-दृष्टि के आधार पर स्पष्ट किया जाता है।
- उत्तर काव्यांश के शब्द-संकेतों पर आधारित हो और प्रश्न में पूछे गए आशय को सीधे स्पष्ट करे।

चरण 1: खंडहर का संकेत पहचानिए 'खंडहर का भाग' कवि के दुःखपूर्ण, अभावग्रस्त और बाहरी वैभव से रहित जीवन का प्रतीक है। खंडहर की तुलना चमकते राजमहलों से की गई है। इसलिए यहाँ केवल टूटे भवन का वर्णन समझना उचित नहीं; यह आंतरिक जीवन की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है।

चरण 2: उसकी मूल्यवत्ता समझिए कवि उस जीवन में भी प्रेम, संवेदना तथा अनुभूतियों का अमूल्य धन रखता है। इसी कारण वह उसे इतना श्रेष्ठ मानता है कि राजाओं के प्रासाद भी उस पर न्योछावर हो सकते हैं। तुलना बाहरी ऐश्वर्य के मुकाबले भाव-संपदा की महत्ता स्थापित करती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने अपने दुःखपूर्ण, अभावग्रस्त जीवन को खंडहर का भाग कहा है। उसमें संचित प्रेम और संवेदनाएँ इतनी मूल्यवान हैं कि उनके सामने राजाओं के भव्य महल भी तुच्छ हैं।

त्वरित सुझाव: खंडहर को अभाव का प्रतीक बताते हुए उसके भीतर की भाव-संपदा का महत्व अवश्य जोड़िए।

10(ग). रोदन में राग लिए फिरने से कवि का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- परस्पर विपरीत भावों के सह-अस्तित्व से कवि के अनुभव और उसकी अभिव्यक्ति का संबंध स्पष्ट होता है।
- उत्तर काव्यांश के शब्द-संकेतों पर आधारित हो और प्रश्न में पूछे गए आशय को सीधे स्पष्ट करे।

चरण 1: रोदन का भाव समझिए रोदन जीवन के दुःख, वेदना और निजी व्यथा का संकेत है। कवि अपनी पीड़ा से अपरिचित नहीं है और उसे छिपाता भी नहीं। काव्यांश में वह स्वयं कहता है कि अपने रोदन में राग लिए फिरता है; अतः पीड़ा और गान साथ उपस्थित हैं।

चरण 2: राग का आशय स्पष्ट कीजिए राग संगीत, मधुरता तथा भावपूर्ण काव्य-अभिव्यक्ति का बोध कराता है। कवि अपने दुःख को केवल विलाप नहीं बने रहने देता, बल्कि उसे गीत का रूप देता है। उसकी रचनात्मक संवेदना निजी पीड़ा को मधुर और प्रभावशाली अभिव्यक्ति प्रदान करती है।

चरण 3: निष्कर्ष रोदन में राग लिए फिरने का आशय है कि कवि अपने दुःख और वेदना को भी मधुर गीतों में ढालता है। उसकी पीड़ा ही उसकी संवेदनशील काव्य-अभिव्यक्ति का आधार बनती है।

त्वरित सुझाव: रोदन का अर्थ दुःख और राग का अर्थ मधुर काव्य बताकर दोनों के रचनात्मक संबंध को जोड़िए।

10(घ). कवि-कर्म के प्रति व्यक्त दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि-कर्म का विवेचन काव्यांश में व्यक्त सृजनशीलता, संवेदना और जीवन-मूल्यों से किया जाता है।
- उत्तर काव्यांश के शब्द-संकेतों पर आधारित हो और प्रश्न में पूछे गए आशय को सीधे स्पष्ट करे।

चरण 1: सृजन की स्वतंत्रता पहचानिए 'मैं बना-बना कितने जग रोज़ मिटाता' में कवि अपनी कल्पना से भाव-जगत रचने की शक्ति बताता है। वह संसार की धन-संपत्ति को लक्ष्य नहीं बनाता। उसका कर्म संवेदना और अनुभव को अभिव्यक्त करना है; इसीलिए उसकी राह भौतिक उपलब्धियों की होड़ से अलग है।

चरण 2: अनुभूति को कविता में ढालने की प्रक्रिया समझिए रोदन में राग तथा शीतल वाणी में आग रखने का कथन बताता है कि कविता दुःख को मधुर अभिव्यक्ति और भीतर की तीव्र अनुभूति को संयत भाषा देती है। कवि अपने अभावों में भी भाव-संपदा खोजता है और उसकी गरिमा बनाए रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि-कर्म स्वतंत्र भाव-संसार की सृष्टि करना है। कवि धन-वैभव से ऊपर संवेदनाओं को रखता है और निजी वेदना तथा भीतर की तीव्र अनुभूतियों को मधुर, संयत काव्य में व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: सृजनशीलता के साथ रोदन में राग और शीतल वाणी में आग के संकेतों को उत्तर से जोड़िए।

अथवा

10. निम्नलिखित काव्यांश में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक लगभग 30 शब्दों में दीजिए ।

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ ।
काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगार न सोऊ ।।
तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ ।
माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबेको एकु न दैबको दोऊ ।। [8 अंक]

10(क). काव्यांश के आधार पर तुलसी के समय के समाज की दो विशेषताएँ बताइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाज की विशेषताएँ काव्यांश के संबोधनों तथा जाति और विवाह संबंधी कथन से निकाली जाती हैं।
- उत्तर काव्यांश के शब्द-संकेतों पर आधारित हो और प्रश्न में पूछे गए आशय को सीधे स्पष्ट करे।

चरण 1: जातिगत विभाजन पहचानिए 'रजपूतु' और 'जोलहा' जैसे संबोधन बताते हैं कि समाज में मनुष्य को उसकी जाति के आधार पर पहचाना जाता था। लोग तुलसी को भी तरह-तरह की संज्ञाएँ देकर उनकी सामाजिक पहचान निर्धारित करना चाहते थे। यह जातिगत ऊँच-नीच वाली मानसिकता का संकेत है।

चरण 2: विवाह और जाति की शुद्धता का आग्रह समझिए 'काहू की जाति बिगार न सोऊ' में जाति बिगड़ने की धारणा प्रकट होती है। विवाह को जाति की सीमाओं से बाँधा गया था और दूसरी जाति से संबंध बनने पर जाति भ्रष्ट होने की आशंका मानी जाती थी। तुलसी इस सामाजिक रूढ़ि के प्रति अपनी निर्लिप्तता प्रकट करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष तुलसी के समय समाज जातिगत ऊँच-नीच और भेदभाव से ग्रस्त था। विवाह-संबंधों में जाति की शुद्धता का आग्रह था तथा दूसरी जाति से संबंध होने पर जाति बिगड़ने का भय माना जाता था।

त्वरित सुझाव: दो विशेषताएँ अलग रखिए: जातिगत भेदभाव और विवाह में जाति-शुद्धता का रूढ़ आग्रह।

10(ख). तुलसीदास को किस बात का कोई अंतर नहीं पड़ता और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि के आत्मविश्वास का आधार उसकी भक्ति तथा सामाजिक संबोधनों के प्रति व्यक्त उदासीनता है।
- उत्तर काव्यांश के शब्द-संकेतों पर आधारित हो और प्रश्न में पूछे गए आशय को सीधे स्पष्ट करे।

चरण 1: किस बात से अंतर नहीं पड़ता, पहचानिए कोई उन्हें धूत कहे, अवधूत कहे, राजपूत कहे या जुलाहा कहे, तुलसी इन संबोधनों से विचलित नहीं होते। 'जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ' से स्पष्ट है कि लोगों की निंदा, प्रशंसा और जातिगत पहचान थोपने का प्रयास उनकी आत्मधारणा नहीं बदलता।

चरण 2: निर्लिप्तता का कारण समझिए तुलसी स्वयं को राम का प्रसिद्ध सेवक बताते हैं। उनके लिए भक्ति ही सच्ची पहचान है, सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं। माँगकर खा लेने और मस्जिद में सो लेने की तत्परता उनकी सीमित आवश्यकताओं और निर्भीक स्वभाव को दिखाती है; वे लोकमत पर आश्रित नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लोग उन्हें धूत, अवधूत, राजपूत या जुलाहा कुछ भी कहें, तुलसी को अंतर नहीं पड़ता। वे स्वयं को राम का सेवक मानते हैं और सामाजिक निंदा या जातिगत पहचान से विचलित नहीं होते।

त्वरित सुझाव: किस बात से अंतर नहीं पड़ता और क्यों नहीं पड़ता, दोनों का उत्तर रामभक्ति के आधार पर दीजिए।

10(ग). तुलसी किस बात पर गर्व अनुभव करते हैं ? और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसी का आत्मपरिचय उनके आराध्य से जुड़ा है; उत्तर का आधार कविता की स्पष्ट पंक्ति होनी चाहिए।
- तुलसी अपने को राम का प्रसिद्ध दास मानते हैं।

चरण 1: काव्यांश में प्रमाण पहचानना 'तुलसी सरनाम गुलामु है राम को' में कवि अपनी पहचान स्वयं बताते हैं। 'सरनाम' का आशय प्रसिद्ध और 'गुलामु' का आशय सेवक है। इसलिए उनका गर्व किसी जाति, वंश या सामाजिक पद के कारण नहीं, राम का सेवक कहलाने में है।

चरण 2: गर्व का कारण स्पष्ट करना राम के प्रति अनन्य समर्पण उनके जीवन का आधार है। इसी भक्तिभाव से उन्हें आत्मसम्मान और संतोष मिलता है। वे लोकनिंदा से विचलित नहीं होते; जिसे जो अच्छा लगे, वह कहे। इसमें भक्ति और आत्मसम्मान का सुंदर मेल है। उत्तर में रामदास होने और उसी से प्राप्त आत्मगौरव का संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष तुलसी राम का प्रसिद्ध दास होने पर गर्व करते हैं, क्योंकि रामभक्ति ही उनके जीवन की सच्ची पहचान और आत्मसम्मान का आधार है; लोगों की निंदा उनके लिए महत्त्वहीन है।

त्वरित सुझाव: 'सरनाम गुलामु' को पहचान का प्रमाण बनाकर गर्व और उसके कारण को जोड़ें।

10(घ). कैसे कहा जा सकता है कि उक्त सवैये में तुलसी का स्वाभिमानी व्यक्तित्व झलकता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वाभिमान का अर्थ अपनी निष्ठा और गरिमा को लोकनिंदा तथा सामाजिक दबाव के सामने बनाए रखना है।
- कवि के कथनों और जीवन-दृष्टि से व्यक्तित्व का निष्कर्ष निकालना चाहिए।

चरण 1: लोकमत के प्रति निर्भीकता तुलसी कहते हैं कि कोई उन्हें धूत, अवधूत, राजपूत या जुलाहा कहे, उन्हें इसकी चिंता नहीं है। दूसरों के आरोपों के कारण वे अपने रामभक्त स्वरूप को नहीं छोड़ते। यह कथन उनके आत्मविश्वास और जातिगत प्रतिष्ठा से स्वतंत्र व्यक्तित्व को प्रकट करता है।

चरण 2: निःस्पृह जीवन में स्वाभिमान वे माँगकर खाने और मस्जिद में सोने को तैयार हैं, लेकिन किसी पर अधिकार जताने या लेन-देन के बंधन में पड़ने की इच्छा नहीं रखते। अभाव सह लेना उनके लिए अपमानजनक सामाजिक निर्भरता से बेहतर है। रामभक्ति से प्राप्त आत्मबल उन्हें निंदा और जाति के दबाव से मुक्त रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष तुलसी लोकनिंदा और जातिगत प्रतिष्ठा की परवाह नहीं करते। वे रामभक्ति में दृढ़ रहकर माँगकर खाने तथा मस्जिद में सोने को तैयार हैं; उनकी निःस्पृहता और निर्भीकता स्वाभिमान दिखाती है।

त्वरित सुझाव: स्वाभिमान बताते समय लोकनिंदा की उपेक्षा और निःस्पृह जीवन, दोनों के पाठ-साक्ष्य दें।

11. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दों में लिखिए :

नील जल में या किसी की, गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो ।
और .....
जादू टूटता है
इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है । [6 अंक]

11(क). प्रस्तुत काव्यांश के अलंकार सौंदर्य पर प्रकाश डालिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्प्रेक्षा में किसी वस्तु में दूसरी वस्तु की संभावना की जाती है; 'जैसे' यहाँ उसका संकेत है।
- अलंकार की पहचान के साथ उसके आधार और सौंदर्य को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: उत्प्रेक्षा का आधार नीले आकाश में उषा की उजली आभा देखकर कवि को लगता है कि नीले जल में किसी की गोरी, झिलमिलाती देह हिल रही हो। वास्तविक दृश्य आकाश और उषा का है, जबकि स्नान करती देह की संभावना कवि की कल्पना है। 'जैसे हिल रही हो' इस संभावना को व्यक्त करता है।

चरण 2: अलंकार का सौंदर्य-प्रभाव इस उत्प्रेक्षा से उषा की उज्ज्वलता और हलचल एक सजीव दृश्य बन जाती है। आकाश का नीलापन जल से और उषा की चमक गौर देह से जुड़ती है। 'जादू टूटता है' उषा के आकर्षक प्रभाव के मिटने का रूपकात्मक कथन है; सूर्योदय पर यह सम्मोहक दृश्य बदल जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'नील जल में ... गौर झिलमिल देह जैसे हिल रही हो' में उत्प्रेक्षा है। उषा में गौर देह की संभावना उसका सौंदर्य सजीव करती है; 'जादू टूटता है' रूपकात्मक है।

त्वरित सुझाव: 'जैसे' देखकर केवल उपमा न लिखें; यहाँ गौर देह की संभावना उत्प्रेक्षा बनाती है।

11(ख). काव्यांश का बिंब स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बिंब वह शब्दचित्र है जो किसी दृश्य या अनुभूति को पाठक की कल्पना में मूर्त करता है।
- यहाँ रंग और गति से निर्मित चाक्षुष बिंब प्रमुख है।

चरण 1: रंगों का दृश्य पहचानना नील जल का चित्र आकाश की नीली पृष्ठभूमि का बोध कराता है। उसमें झिलमिलाती गौर देह का चित्र उषा की उजली, चमकती आभा को सामने लाता है। यह दृश्य आँखों के सामने उभरता है, इसलिए इसे दृश्य अथवा चाक्षुष बिंब कहा जाएगा। नीले और उजले रंग का मेल प्रातःकालीन आकाश को आकर्षक और कोमल बनाता है।

चरण 2: गति और सजीवता स्पष्ट करना 'हिल रही हो' से चित्र स्थिर नहीं रहता; उसमें लहराने और झिलमिलाने की गति जुड़ती है। इस प्रकार कवि अमूर्त प्रकाश को जल में हिलती उजली देह के परिचित दृश्य से मूर्त करते हैं। सूर्योदय के साथ यह विशेष रंग-रूप बदलता है और उषा का जादुई बिंब समाप्त हो जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष नीले जल में हिलती गौर, झिलमिल देह का चाक्षुष बिंब है। इसमें नीले आकाश में उषा की उजली आभा की चमक और हलचल सजीव होकर सामने आती है।

त्वरित सुझाव: बिंब स्पष्ट करते समय नीला आकाश, उजली आभा और हिलने की गति को जोड़ें।

11(ग). काव्यांश का भाव-सौन्दर्य लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में कविता से उत्पन्न अनुभूति और प्रकृति के प्रति कवि की संवेदना स्पष्ट की जाती है।
- यहाँ प्रातःकालीन प्रकृति की मोहकता और उसके क्षणभंगुर रूप का अनुभव मुख्य है।

चरण 1: उषा की मोहकता समझना कवि को उषाकालीन आकाश अत्यंत कोमल और आकर्षक लगता है। नीले विस्तार में चमकती उजली आभा उन्हें जल में हिलती गौर देह जैसी दिखाई देती है। इस कल्पना में प्रकृति के सौंदर्य के प्रति गहरा आकर्षण और विस्मय व्यक्त हुआ है।

चरण 2: सूर्योदय से परिवर्तन का भाव उषा का यह सौंदर्य स्थायी नहीं है। सूर्य के निकलते ही उसके रंग और छायाएँ बदल जाती हैं, इसलिए कवि कहते हैं कि उसका जादू टूटता है। कविता प्रकृति के प्रतिपल बदलते रूप की अनुभूति कराती है; इसे शोक या निराशा के रूप में पढ़ना उचित नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष उषा की उजली, झिलमिल आभा कवि को मंत्रमुग्ध करती है। सूर्योदय पर उसका आकर्षक रूप बदल जाता है। काव्यांश प्रकृति के कोमल सौंदर्य, विस्मय और परिवर्तनशीलता का अनुभव कराता है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य में अलंकारों की सूची के बजाय मोहकता, विस्मय और सूर्योदय का परिवर्तन लिखें।

12. यशोधर बाबू ने अपने प्रेरणा-स्रोत किशन दा से किन जीवन-मूल्यों को प्राप्त किया ? वे मूल्य उनके लिए कितने उपयोगी रहे ? लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किशन दा यशोधर बाबू के मार्गदर्शक हैं; उनके व्यक्तित्व से सादगी, स्वाभिमान, आत्मानुशासन और दूसरों की सहायता करने की प्रेरणा मिलती है।
- प्रश्न में मूल्यों के उल्लेख के साथ उनकी उपयोगिता का मूल्यांकन भी अपेक्षित है। आदर्शों की सार्थकता और बदलते पारिवारिक परिवेश में उनकी सीमा, दोनों समझना आवश्यक है।

चरण 1: जीवन-मूल्यों और व्यवहार का संबंध किशन दा ने यशोधर बाबू को महानगर में अपने पैरों पर खड़ा होने की प्रेरणा दी। वे पहाड़ से आए लोगों को सहारा देते और सामूहिक जीवन को महत्त्व देते थे। उनके प्रभाव से यशोधर बाबू ने सादगी, परिश्रम तथा आत्मसम्मान अपनाया। इसलिए उत्तर केवल गुणों की सूची न बने; इन गुणों को यशोधर बाबू के जीवन से जोड़ना चाहिए।

चरण 2: उपयोगिता का संतुलित मूल्यांकन इन मूल्यों ने यशोधर बाबू को कर्तव्यनिष्ठ और संयमी बनाया, किंतु नए समय की प्रत्येक बात को पुराने आदर्शों से जाँचने की प्रवृत्ति ने परिवार से उनकी दूरी बढ़ाई। यहाँ मूल्यों को निरर्थक कहना अनुचित होगा; कठिनाई मूल्यों के साथ परिस्थितियों के अनुरूप लचीलापन न रख पाने की है।

चरण 3: लगभग 150 शब्दों में उत्तर यशोधर बाबू के जीवन में किशन दा का स्थान अभिभावक और मार्गदर्शक का था। उनसे उन्होंने सादगी, आत्मसम्मान, परिश्रम, अनुशासन और दूसरों की सहायता करने जैसे जीवन-मूल्य प्राप्त किए। किशन दा पहाड़ से आने वाले लोगों को सहारा देते थे। इस सामुदायिक भावना ने यशोधर बाबू को अपनी जड़ों और परिचितों से जोड़े रखा। उन्होंने दिखावे तथा अनावश्यक खर्च से बचना और अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से निर्वाह करना सीखा। ये मूल्य उनके व्यक्तित्व को दृढ़ तथा जिम्मेदार बनाने में उपयोगी रहे। किंतु बदलते समय में किशन दा के जीवन-दृष्टिकोण को ही अंतिम कसौटी मान लेना उनके लिए कठिनाई भी बना। पत्नी और बच्चों की आधुनिक रुचियों तथा उत्सव मनाने के ढंग को वे सहजता से स्वीकार नहीं कर पाए। फलतः परिवार में रहते हुए भी अकेलापन अनुभव करते रहे। अतः प्राप्त मूल्य सार्थक थे, पर उनके साथ समयानुकूल लचीलापन जुड़ता तो वे पारिवारिक जीवन में अधिक उपयोगी सिद्ध होते।

चरण 4: निष्कर्ष किशन दा से मिले मूल्यों ने यशोधर बाबू को सादगी और कर्तव्यनिष्ठा दी; बदलते परिवेश के प्रति लचीलेपन के अभाव

ने उनकी पारिवारिक उपयोगिता सीमित कर दी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले किशन दा से मिले मूल्य लिखें, फिर उनके लाभ और पारिवारिक सामंजस्य की कठिनाई का संतुलित मूल्यांकन करें।

13(क). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 30-40 शब्दों में दीजिए : पहलवान की ढोलक की आवाज पूरे गाँव के मरणासन्न लोगों की सहायता कैसे कर रही थी ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी में ढोलक की आवाज महामारी और मृत्यु के आतंक के बीच जीवन-संघर्ष का प्रतीक बनती है।
- सहायता का अर्थ यहाँ रोग का उपचार नहीं, निराश मन में साहस और जीवित रहने की इच्छा जगाना है।

चरण 1: प्रसंग का आशय समझें महामारी से ग्रस्त गाँव में रात का सन्नाटा और मृत्यु का भय लोगों को असहाय बना रहे थे। ऐसे वातावरण में पहलवान की ढोलक सुनाई पड़ती थी। उसकी लय गाँव के मरणासन्न लोगों को यह अनुभव कराती थी कि संघर्ष की शक्ति अभी समाप्त नहीं हुई है। इसलिए उत्तर में ढोलक के मानसिक संबल पर ध्यान देना चाहिए।

चरण 2: सहायता का स्वरूप स्पष्ट करें ढोलक की आवाज का प्रभाव पहलवान के अपने संघर्ष से जुड़ा है। जिस लय से वह प्रतिद्वंद्वी का सामना करने का साहस पाता था, वही गाँव वालों में मृत्यु के आतंक का सामना करने का हौसला जगाती है। आवाज को बीमारी दूर करने वाला चमत्कार कहना कहानी के आशय के विपरीत होगा। यह निराशा और भय के विरुद्ध मनोबल का सहारा है। इससे लोगों की चेतना मृत्यु की प्रतीक्षा में निष्क्रिय पड़ने के बजाय जीवन की ओर उन्मुख होती है।

चरण 3: 30-40 शब्दों में उत्तर महामारी से भयभीत गाँव में पहलवान की ढोलक की आवाज मरणासन्न लोगों के मन में साहस और जीवन के प्रति आशा जगाती थी। वह मृत्यु के आतंक और निराशा को चुनौती देकर उन्हें संघर्ष करते रहने का संबल देती थी।

चरण 4: निष्कर्ष ढोलक की लय गाँव वालों को भय और निराशा से जूझने के लिए मानसिक शक्ति देती थी।

त्वरित सुझाव: ढोलक की सहायता को मानसिक साहस और जीवन-संघर्ष से जोड़ें; उसे रोग का इलाज बताने से बचें।

13(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 30-40 शब्दों में दीजिए : 'लाहौर अभी तक मेरा वतन है ।' इस कथन से व्यक्त वेदना पर अपने विचार व्यक्त कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी 'नमक' में विभाजन के बाद भी जन्मभूमि से बना भावनात्मक संबंध प्रमुख है।
- वतन का भाव केवल राजनीतिक सीमा से निर्धारित नहीं होता; स्मृति, अपनापन और साझा जीवन भी उसे निर्मित करते हैं।

चरण 1: कथन का प्रसंग और भाव यह कथन उस सिख बीबी का है जो विभाजन के बाद भारत में रहती है, किंतु लाहौर को अब भी अपना वतन मानती है। लाहौर से नमक लाने की उसकी इच्छा वहाँ से जुड़े आत्मीय संबंध का संकेत है। प्रश्न उसके शब्दों में छिपे बिछोह को समझने के लिए कहता है; केवल किसी शहर की प्रशंसा करना पर्याप्त नहीं है।

चरण 2: वेदना पर विचार विभाजन ने लोगों के निवास और नागरिक पहचान बदल दिए, पर उनकी स्मृतियाँ एक झटके में नहीं बदलीं। अपने पुराने घर और परिवेश से अलग होने की पीड़ा इस कथन में व्यक्त होती है। कहानी इस भाव के माध्यम से दिखाती है कि राजनीतिक बँटवारा मनुष्यों के भीतर के लगाव को समाप्त नहीं कर सकता। उत्तर में इसी मानवीय विडंबना को संक्षेप में व्यक्त करना चाहिए।

चरण 3: 30-40 शब्दों में उत्तर सिख बीबी के कथन में विभाजन के कारण जन्मभूमि से बिछुड़ने की पीड़ा है। भारत में बसने पर भी लाहौर की स्मृतियाँ और अपनापन जीवित हैं। राजनीतिक सीमाएँ मनुष्य के हृदय में बसे वतन को मिटा नहीं सकतीं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन विस्थापन की वेदना तथा राजनीतिक विभाजन के बावजूद जन्मभूमि से बने रहने वाले आत्मीय संबंध को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: 'अभी तक' शब्दों पर ध्यान दें; वे बीते समय और बदली सीमाओं के बावजूद जीवित स्मृतियों की ओर संकेत करते हैं।

13(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 30-40 शब्दों में दीजिए : शिरीष की तुलना किससे की गई है और क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंध में शिरीष जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मस्ती और सहजता बनाए रखने का प्रतीक है।
- अवधूत का आशय ऐसे अनासक्त साधक से है जो बाहरी सुख-दुःख से विचलित नहीं होता।

चरण 1: तुलना का आधार समझें शिरीष को अवधूत कहा गया है। भीषण गर्मी, लू और उमस के बीच भी वह कोमल फूलों से लदा रहता है। बाहर की कठोरता उसके भीतर की सरसता को नष्ट नहीं करती। इसी कारण उसकी मस्ती साधारण बेपरवाही नहीं, कठिनाइयों के बीच जीवन के प्रति उल्लास है।

चरण 2: पाठ का आशय जोड़ें लेखक कबीर जैसे मस्त और अनासक्त व्यक्तित्व में भी यही विशेषता देखते हैं। उत्तर में मुख्य तुलना अवधूत से बताकर प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रसन्न बने रहने का कारण स्पष्ट करना चाहिए। केवल फूलों की सुंदरता बताने से तुलना का जीवन-दर्शन स्पष्ट नहीं होगा। यहाँ कोमलता और कठोरता का विरोध विशेष महत्त्व रखता है। मौसम जितना कठोर है, शिरीष के फूल उतने ही कोमल हैं। इस विरोध से स्पष्ट होता है कि संघर्ष सहने की शक्ति का अर्थ हृदय को कठोर बना लेना नहीं है। मनुष्य भी कठिन जीवन में संवेदनशील और आनंदपूर्ण रह सकता है। यही तुलना की प्रेरक सार्थकता है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष की तुलना एक मस्त अवधूत से की गई है। वह भीषण गरमी और लू में भी सरस, कोमल फूलों से लदा रहता है। अवधूत की तरह वह प्रतिकूल परिस्थितियों से अप्रभावित रहकर अनासक्ति और जीवन की मस्ती सिखाता है।

त्वरित सुझाव: तुलना लिखते समय अवधूत की अनासक्ति और शिरीष की प्रतिकूल मौसम में सरसता को एक साथ जोड़ें।

13(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 30-40 शब्दों में दीजिए : भक्तिन अपना नाम क्यों बदलना चाहती थी ? लेखिका ने इस सन्दर्भ में क्या कहा है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा के संस्मरण में भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन है, जो लक्ष्मी नाम का लोकप्रचलित रूप है।
- नाम और जीवन की वास्तविक स्थिति का विरोध तथा भक्तिन के धार्मिक बाह्य रूप से नया संबोधन जुड़ता है।

चरण 1: पुराने नाम से असंतोष बताएं लक्ष्मी धन-संपत्ति की देवी मानी जाती हैं, लेकिन लछमिन का जीवन आर्थिक अभावों और संघर्षों में बीता था। अपने जीवन के विपरीत अर्थ वाले इस नाम को वह प्रकट नहीं करना चाहती थी। उसने लेखिका से भी अपना वास्तविक नाम किसी को न बताने का आग्रह किया।

चरण 2: लेखिका का नया संबोधन समझें लेखिका ने उसकी कंठी-माला और धार्मिक वेश के अनुकूल उसे भक्तिन कहना शुरू किया। नया नाम उसकी इच्छा का सम्मान भी करता है और उसके व्यक्तित्व के एक प्रत्यक्ष पक्ष से जुड़ता है। उत्तर में वास्तविक नाम, उससे असंतोष का कारण और लेखिका का दिया नया नाम—तीनों आने चाहिए। यह प्रसंग भक्तिन की आत्मचेतना भी दिखाता है। वह अपने नाम के अर्थ और जीवन की परिस्थिति के बीच अंतर समझती है। इसलिए उसके आग्रह को केवल नाम बदलने का शौक नहीं समझना चाहिए। लेखिका उसके मन का सम्मान करती हैं और धार्मिक रूप के अनुरूप सहज संबोधन चुनती हैं। इससे दोनों के आत्मीय संबंध का

परिचय मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन का असली नाम लछमिन था। लक्ष्मी से जुड़ा यह नाम उसके अभावग्रस्त जीवन के विपरीत था, इसलिए वह इसे छिपाना चाहती थी। लेखिका ने उसकी कंठी-माला देखकर उसे भक्तिन नाम दिया और वास्तविक नाम गुप्त रखा।

त्वरित सुझाव: लछमिन नाम, जीवन में धन का अभाव और कंठी-माला के कारण मिला भक्तिन संबोधन—इन तीनों को जोड़कर उत्तर लिखें।

13(ङ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 30-40 शब्दों में दीजिए : आप बाजार जाते समय उसके जादू से बचने के लिए क्या उपाय करेंगे ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जैनेंद्र कुमार का निबंध बाजार के आकर्षण से उत्पन्न अनावश्यक खरीद और वास्तविक जरूरत पर आधारित उपयोगी खरीद में भेद करता है।
- मन का भरा होना अपनी जरूरत के बारे में स्पष्ट होना है; केवल अधिक धन रखना विवेकपूर्ण खरीद की शर्त नहीं है।

चरण 1: बाजार जाने से पहले तैयारी करें मैं घर की आवश्यकताओं की सूची बनाऊँगा और उपलब्ध धन के अनुसार खर्च की सीमा तय करूँगा। इससे खरीदारी का उद्देश्य स्पष्ट रहेगा। विज्ञापनों, सजावट और नई वस्तुओं की चमक को देखकर हर वस्तु अपने लिए आवश्यक मान लेना बाजार के जादू में फँसना है।

चरण 2: खरीदते समय विवेक अपनाएं मैं वस्तु की उपयोगिता, गुणवत्ता और उचित मूल्य देखकर ही खरीदूँगा। छूट या दिखावे के कारण सूची से बाहर की वस्तु नहीं लूँगा। निबंध के अनुसार अपनी जरूरत जानने वाला व्यक्ति बाजार से उपयोगी वस्तु ग्रहण करता है; अनिश्चित इच्छाएँ और खाली मन उसे अनावश्यक संग्रह की ओर ले जाते हैं। इस उपाय का उद्देश्य बाजार को पूरी तरह त्यागना नहीं है। घर-परिवार की आवश्यक वस्तुओं की खरीद बाजार से ही होती है। जरूरी बात यह है कि खरीद का निर्णय मेरी वास्तविक आवश्यकता करे। दूसरे लोगों के पास कोई वस्तु देखकर उसकी नकल में खरीदना भी अनावश्यक इच्छा बढ़ाता है। इसलिए तुलना और प्रतिस्पर्धा से बचना उपयोगी होगा।

चरण 3: निष्कर्ष मैं अपनी जरूरतें स्पष्ट करके सूची और बजट बनाकर बाजार जाऊँगा। आकर्षक सजावट, विज्ञापनों और छूट के प्रलोभन में नहीं पड़ूँगा। केवल उपयोगी वस्तुएँ उचित मूल्य पर खरीदूँगा तथा दिखावे और अनावश्यक संग्रह की इच्छा पर नियंत्रण रखूँगा।

त्वरित सुझाव: अपनी जरूरतों की सूची को खरीद का आधार बनाएं; आकर्षण या छूट को किसी वस्तु की जरूरत का प्रमाण न मानें।

14(क). "प्रतिकूलता में अनुकूलन करने की क्षमता है ।" 'जूझ' पाठ में उल्लिखित इस बात से आप कहाँ तक सहमत हैं और क्यों ? लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'जूझ' में आनंदा का संघर्ष दिखाता है कि परिस्थितियाँ कठिन होने पर भी शिक्षा की इच्छा, विवेक और परिश्रम से आगे बढ़ने का रास्ता निकाला जा सकता है।
- अनुकूलन का अर्थ लक्ष्य छोड़ देना नहीं, बल्कि बाधाओं को समझकर उपलब्ध साधनों और सहयोग से लक्ष्य तक पहुँचने की युक्ति अपनाना है।

चरण 1: कथन का आशय और पाठगत आधार प्रश्न में प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच स्वयं को ढालने की क्षमता का मूल्यांकन करना है। आनंदा पढ़ना चाहता है, किंतु उसके पिता उसे खेती में लगाए रखना चाहते हैं। वह केवल विरोध करके नहीं रुकता; माँ और दत्ता जी राव के सहयोग से पढ़ाई का अवसर प्राप्त करता है। विद्यालय पहुँचने के बाद भी उपहास और पढ़ाई में पिछड़ जाने की कठिनाइयाँ आती

हैं। इनसे बचने के बजाय वह मेहनत करके अपनी स्थिति सुधारता है।

चरण 2: लगभग 150 शब्दों में मॉडल उत्तर मैं इस कथन से काफी हद तक सहमत हूँ। 'जूझ' का आनंदा प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने लक्ष्य के लिए रास्ता निकालता है। उसके पिता पढ़ाई के स्थान पर उससे खेत का काम कराना चाहते हैं। आनंदा निराश होकर शिक्षा की इच्छा नहीं छोड़ता। वह माँ का सहयोग लेता है और दत्ता जी राव के हस्तक्षेप से दोबारा विद्यालय जाने का अवसर पाता है। इसके लिए उसे खेती के काम की जिम्मेदारी भी निभानी पड़ती है। विद्यालय में उसकी वेशभूषा और पिछड़ी हुई पढ़ाई के कारण कठिनाइयाँ आती हैं, किंतु वह परिश्रम से अपनी पहचान बनाता है। न. वा. सौंदलगेकर के काव्यपाठ से प्रेरित होकर वह खेत में काम करते समय भी कविता का अभ्यास करता है। इस प्रकार वही परिवेश उसके अभ्यास का अवसर बन जाता है। उसका अनुभव बताता है कि अनुकूलन निष्क्रिय समझौता नहीं, लक्ष्य बनाए रखकर परिस्थितियों का रचनात्मक उपयोग करना है। उसकी सफलता में निजी लगन के साथ दूसरों का सहयोग भी महत्त्वपूर्ण है।

चरण 3: निष्कर्ष आनंदा का जीवन इस कथन की पुष्टि करता है। वह कठिनाइयों के सामने लक्ष्य नहीं छोड़ता, बल्कि शिक्षा और काव्यरुचि को खेती तथा पारिवारिक दबावों के बीच विकसित करने का मार्ग खोजता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कथन का अर्थ बताकर पिता का विरोध, दत्ता जी राव का सहयोग और खेत में कविता का अभ्यास जैसे ठोस प्रसंग जोड़िए।

14(ख). 'अतीत में दबे पाँव' के आधार पर सिद्ध कीजिए कि "हड़प्पा-कालीन संस्कृति कृषि प्रधान संस्कृति थी ।" लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'अतीत में दबे पाँव' में हड़प्पा सभ्यता के पुरावशेषों के आधार पर उसके आर्थिक और सामाजिक जीवन की पहचान की गई है। कृषि उसकी समृद्धि का प्रमुख आधार थी।
- कृषि प्रधानता सिद्ध करने के लिए अनाज, खेती के साधन, जल की उपलब्धता और कृषि से जुड़े व्यापार के प्रमाणों को आपस में जोड़ना चाहिए।

चरण 1: प्रमाणों का चयन और उत्तर की रूपरेखा नगरों की विकसित बनावट देखकर केवल शहरी जीवन का उल्लेख पर्याप्त नहीं है। पाठ में गेहूँ, जौ और कपास की खेती, अनाज रखने के कोठार तथा खेती के उपकरणों का उल्लेख कृषि के महत्त्व को स्पष्ट करता है। सिंधु का जल और उपजाऊ भूमि खेती के अनुकूल थे। कपास का उत्पादन और उसका व्यापार बताते हैं कि कृषि केवल भोजन की आवश्यकता तक सीमित नहीं थी। इन्हीं प्रमाणों से निष्कर्ष निकालना चाहिए कि नगरों के व्यापार और समृद्धि का आधार भी कृषि उत्पादन था।

चरण 2: लगभग 150 शब्दों में मॉडल उत्तर 'अतीत में दबे पाँव' में वर्णित हड़प्पा सभ्यता के अवशेष उसकी कृषि प्रधानता को स्पष्ट करते हैं। इस सभ्यता में गेहूँ, जौ और कपास की खेती होती थी। अनाज रखने के बड़े कोठारों का मिलना बताता है कि उत्पादन केवल तत्काल उपभोग के लिए नहीं था; अनाज का संग्रह भी किया जाता था। खेती के उपकरण कृषि के व्यवस्थित विकास का प्रमाण हैं। सिंधु नदी का जल और उसके आसपास की उपजाऊ भूमि खेती के लिए अनुकूल आधार प्रदान करते थे। कपास का उत्पादन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इससे वस्त्र निर्माण और व्यापार को बढ़ावा मिला। इस प्रकार कृषि से भोजन के साथ अन्य आर्थिक गतिविधियों के लिए कच्चा माल भी प्राप्त होता था। विकसित नगर, व्यापार और कारीगरी के पीछे कृषि से प्राप्त उपज तथा अधिशेष की भूमिका समझी जा सकती है। इसलिए हड़प्पा सभ्यता की पहचान केवल उसकी नगर योजना से नहीं होती; उसके आर्थिक जीवन की जड़ें खेती में गहराई तक जुड़ी थीं।

चरण 3: निष्कर्ष फसलों की खेती, अनाज का संग्रह, कृषि के उपकरण और कृषि उत्पादों पर आधारित व्यापार मिलकर सिद्ध करते हैं कि हड़प्पा-कालीन संस्कृति का आर्थिक आधार कृषि था।

त्वरित सुझाव: कृषि प्रधानता सिद्ध करते समय केवल फसलों की सूची न दीजिए; कोठार, सिंधु की भूमि और कपास के व्यापार को भी निष्कर्ष से जोड़िए।